

वर्ष : 2022-23
अंक- प्रथम

धरा गुर्जरी



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest



कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II) गुजरात
कार्यालय, प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) अहमदाबाद

कीर्ति तोरण

गुजरात के वडनगर शहर में स्थित कीर्ति तोरण लगभग 40 फ़ीट लंबे लाल और पीले बलुआ पत्थर से बना है। यह शहर के उत्तर में अर्जुन बारी से नीचे जाने वाली सड़क पर शर्मिष्ठा तालाब के किनारे स्थित है।

यह स्तम्भ गुजरात में सोलंकी काल में प्रचलित वास्तुकला की एक नियमित विशेषता, 'प्रवेश द्वार' का जीवंत उदाहरण है। इसे बारहवीं शताब्दी में सोलंकी शासकों द्वारा बनवाया गया था। इस स्तम्भ की नक्काशी की शैली सिद्धपुर में स्थित रुद्र महालय के समान है।

यह स्तम्भ संभवतः युद्ध में जीत के बाद बनाया गया था तथा यह युद्ध और शिकार के दृश्यों की नक्काशी से अलंकृत है।

धरा गुर्जरी

अंक-1 वर्ष: 2022-23

संरक्षक:

श्री एच. के. धर्मदर्शी, प्रधान महालेखाकार

श्री विजय एन. कोठारी, प्रधान निदेशक

संपादक मंडल:

श्रीमती मोनिका दवे, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

डॉ. संदीप कुमार बाजपेई, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री रवीन्द्र सचान, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती धनवंती टिब्बानी सिसोदिया, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादकीय

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) गुजरात एवं प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), अहमदाबाद के कार्यालयों की संयुक्त हिन्दी पत्रिका "धरा गुर्जरी" का वर्ष 2022-23 का प्रथम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है।

गुजरात में स्थित हमारे कार्यालयों की इस पत्रिका के आवरण पृष्ठ तथा पार्श्व पृष्ठ में राज्य की संस्कृति की झलक दर्शाते वास्तुकला, हस्तकला तथा मेलों और त्यौहारों के विवरण को समाविष्ट करने के प्रयास की निरन्तरता के तहत इस अंक में कीर्ति तोरण, सूफ़ हस्तशिल्प और चित्र-विचित्र मेले को सम्मिलित किया गया है।

पूर्व की भांति इस अंक में भी कार्यालय के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक अपने स्वरचित अनुभवों, संस्मरणों, विचारों को विभिन्न लेखों, तथा कविताओं के माध्यम से व्यक्त कर सराहनीय योगदान दिया है।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित की गई रचनाओं में सतत विकास लक्ष्य, जैसे ज्ञानवर्धक लेख, जिगर मुरादाबादी तथा लौकिक न्याय जैसे साहित्यिक लेख तथा आनंद का रेज़िज़ेशन जैसे रुचिकर लेख हैं तो फूड फ़ॉर थॉट, पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों पर विचार करने के लिए प्रेरित करने वाले लेख भी हैं। इस के अतिरिक्त मैं सड़क हूँ, तीन तेरह हो गया, इत्यादि उत्कृष्ट मौलिक कविताएं भी इस अंक में सम्मिलित हैं।

संपादक मण्डल एवं संरक्षक मण्डल कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) तथा कार्यालय प्रधान निदेशक के कार्यालय के सदस्यों का आह्वान करते हैं कि भविष्य में भी अधिकाधिक संख्या में स्तरीय स्वरचित रचनाएँ प्रदान करने के क्रम को जारी रखें तथा आशा करते हैं कि आगामी अंकों में धरा-गुर्जरी में नए-नए रचनाकारों की रचनाएं भी सम्मिलित होंगी।

अनुक्रमणिका

संपादकीय				i
अनुक्रमणिका				ii
क्रम	रचना का नाम	रचनाकार	विधा	पृष्ठ
1.	जिगर मुरादाबादी	श्री अनुपम कुलश्रेष्ठ, उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सेवानिवृत्त)	लेख	1
2.	लौकिक न्याय	श्री अजय कुमार शुक्ल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	4
3.	तीन तेरह हो गया	श्री अभिषेक कुमार, हिंदी अधिकारी	कविता	6
4.	बेवकूफ़ी की महिमा	श्री अमनदीप, लेखापरीक्षक	कविता	7
5.	मेरे पटना से गुजरात स्थानान्तरण के पश्चात यहाँ फ़्रील्ड में लेखापरीक्षा का अनुभव।	श्री अमित कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	10
6.	मैं सड़क हूँ	श्री कश्यप व्यास, पर्यवेक्षक	कविता	11
7.	कर कोई सृजन नया	श्रीमती कुसुम लता, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक	कविता	12
8.	आज के आत्मनिर्भर भारत में हिंदी का महत्त्व	श्री घनश्याम बिहारी शर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	निबंध	14
9.	हमसफ़र	श्री चिट्टू एम. गुप्ता, लेखापरीक्षक	कविता	17
10.	परिवार की महिमा	श्री छत्रपाल सिंह राठौर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	18
11.	दूर रहना तो कोई तुम से सीखे	श्री जितेन्द्र कश्यप, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	19
12.	क्षेत्रीय भाषाओं का हिन्दी शब्द-भंडार पर प्रभाव	श्री दीपक कुमार मीना, निरीक्षक, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर कार्यालय, अहमदाबाद दक्षिण	निबंध	20
13.	एक सोच	श्री दीपेश कुमार गुप्ता, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	कविता	25
14.	पर्यावरण संरक्षण	श्रीमती धनवन्ती टिब्बानी सिसोदिया, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	27

15.	एक दिन	श्री नरेश सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	29
16.	तू खोया हुआ है क्यों	श्री प्रवीण कुमार झा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	34
17.	बचपन	श्री प्रशांत कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	संस्मरण	36
18.	गज़ल	श्री बाल मुकुंद त्रिपाठी, सहायक पर्यवेक्षक	गज़ल	42
19.	ज़िन्दगी	श्री बिनय कुमार, लेखापरीक्षक	कविता	43
20.	फूड फ़ॉर थॉट	श्रीमती मोनिका दवे वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	44
21.	एक क्रान्तिकारी का जन्मदिवस	श्री राज कुमार सिंहल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	49
22.	सतत् विकास लक्ष्य	श्री राजीव कुमार गर्ग, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	51
23.	श्री महावीर जन्म प्रसंग	श्रीमती रीना अभ्यंकर, पर्यवेक्षक	संस्मरण	54
24.	संघर्ष का फल, आज नहीं तो कल	श्री रुपेश रंजन तिवारी, खापरीक्षक	कविता	59
25.	वर्तमान युवा पीढ़ी का अवलोकन	श्री रोशन लाल मीना, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	60
26.	माँ की याद	श्री लोकेश कुमार मीना, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	कवितार	62
27.	लेखन कार्य का महत्त्व	श्री शिवानंद, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	लेख	63
28.	कार्यालय और मेरा अनुभव	श्री संतोष कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	66
29.	वो भूली बिसरी बचपन की यादें	श्री संतोष झा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	69
30.	पैसा बनाम मानसिक शांति	डॉ. संदीप कुमार बाजपेई वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	70
31.	लड़का बनने की ज़रूरत नहीं	श्री सुभाष बंसीवाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	कविता	74
32.	समय-चक्र	श्री हर्षद आर. परमार, लेखापरीक्षक	कविता	75
33.	आनंद का रेज़िग्रेशन	श्री हर्षित पांडे, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	76
34.	वज़न	श्री हिमांशु काश्यप धर्मदर्शी, प्रधान महालेखाकार	लेख	79

अस्वीकरण - इस अंक में सम्मिलित रचनाओं में व्यक्त विचारों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष उत्तरदायित्व स्वयं रचनाकारों का है जिन से संपादक मण्डल या कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रकाशन सहयोग

1. श्री पवन सिंगला, हिन्दी अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) गुजरात, अहमदाबाद
2. श्री अभिषेक कुमार, हिन्दी अधिकारी, कार्यालय प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), अहमदाबाद
3. श्री शिवानंद, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
4. श्रीमती कुसुम लता, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
5. श्री चिट्टू एम. गुप्ता, लेखापरीक्षक

जिगर मुरादाबादी (6 अप्रैल 1890 - 9 सितम्बर 1960)

अनुपम कुलश्रेष्ठ

उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सेवानिवृत्त)

हुस्र और इश्क की बात चले तो उर्दू शायरी का जिक्र अनायास ही जुबां पर आ जाता है। दिल के हालात और एहसास को उम्दा शब्द देने हों तो उर्दू बेहतर साबित होती है।

इश्क की शेरों-शायरी से शुरू हो उर्दू के इस सफ़र को ज़िंदगी के अलग अलग आयामों तक पहुंचाने का काम जिगर मुरादाबादी ने बखूबी किया है। मुलाहिजा फरमाइए।



ये इश्क नहीं आसाँ इतना ही समझ लीजे,

इक आग का दरिया है और डूब के जाना है ।

जिगर का बचपन का नाम अली सिकंदर था। उनके पूर्वज दिल्ली निवासी थे और शाहजहाँ के शिक्षक थे। किसी कारण से बादशाह के कोप-भाजन बन गए और दिल्ली छोड़कर मुरादाबाद जा बसे। जिगर किस खूबसूरती से इश्क में आशिक का हाल बयां करते हैं।

हम इश्क के मारों का इतना ही फ़साना है

रोने को नहीं कोई हँसने को ज़माना है

इब्तिदा वो थी कि जीना था मुहब्बत में मुहाल

इंतिहा ये है कि अब मरना भी मुश्किल हो गया

मुहब्बत में एक ऐसा वक़्त भी दिल पर गुज़रता है

कि आंसू खुश्क हो जाते हैं तुगयानी नहीं जाती

जिगर की शायरी से पता चलता है कि मुहब्बत में कैसा वक्त आता है,

मोहब्बत में ये क्या मक़ाम आ रहे हैं

कि मंजिल पे हैं और चले जा रहे हैं

ये कह कह के दिल को बहला रहे हैं
वो अब चल चुके हैं वो अब आ रहे हैं

जिगर ने बचपन में ही आज़ादी की लड़ाई को महसूस किया और अपनी शायरी का विषय भी बनाया।

हम को मिटा सके ये ज़माने में दम नहीं
हम से ज़माना ख़ुद है ज़माने से हम नहीं

उनका संदेश देखिए,

यह सुनता हूँ कि प्यासी है बहुत खाक-ए-वतन साकी
खुदा हाफिज़ चला में बांध कर दार-व-रसन साकी
सलामत तू तिरा मेहखाना, तेरी अंजुमन साकी
मुझे करनी है अब कुछ खिदमत दार-व-रसन साकी

उनकी शायरी बीसवीं सदी के शुरू की है, पर तब भी इंसानियत की कमी महसूस होती थी।

जहल-ए-खिरद ने दिन ये दिखाए
घट गए इंसान बढ गए साए

वफा का नाम कोई भूल कर नहीं लेता
तेरे सलूक ने चौंका दिया ज़माने को

ज़माने के बदलाव से भी उनकी शायरी अछूती न रही।

आदमी के पास सब कुछ है मगर
एक तन्हा आदमियत ही नहीं
आदमी आदमी से मिलता है

दिल मगर कम किसी से मिलता है

भूल जाता हूँ मैं सितम उस के
वो कुछ इस सादगी से मिलता है
मिल के भी जो कभी नहीं मिलता
टूट कर दिल उसी से मिलता है
रूह को भी मज़ा मोहब्बत का
दिल की हम-साएगी से मिलता है

और अंत में

उन का जो फ़र्ज़ है वो अहल-ए-सियासत जानें
मेरा पैग़ाम मुहब्बत है जहां तक पहुंचे



नगराकास के तत्वावधान में दिनांक 03 अगस्त 2022 को
आयोजित की गई निबंध प्रतियोगिता

लौकिक न्याय

अजय कुमार शुक्ल,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संस्कृत साहित्य में लौकिक न्याय का अभिप्राय लोकोक्ति से है। लौकिक न्याय का प्रयोग विशेष परिस्थितियों को दर्शाने के लिए किया जाता है। इनकी संख्या चार सौ से भी अधिक है तथा कुछ की व्याख्या यहाँ की जा रही है :

1. सूचीकटाह न्याय : सूची का अर्थ है सुई तथा कटाह से तात्पर्य है कड़ाही। यदि कोई मनुष्य लुहार के पास कड़ाही लेने गया है तथा थोड़ी ही देर बाद एक अन्य मनुष्य सुई लेने लुहार के पास आता है, अब लुहार को क्या करना चाहिए ? सामान्यतः लुहार स्वयं निर्णय लेते हुए पहले सुई बनाता है क्योंकि सुई बनाने में अल्प समय लगता है। वह उस व्यक्ति को, जिसे अल्प कार्य चाहिए शीघ्र छोड़ देता है। फिर वह कड़ाही बनाने का कार्य प्रारंभ करता है। इस न्याय का प्रयोग कार्यों की प्रमुखता तय करते समय किया जाता है।

2. उष्ट्रलगुड़ न्याय : उष्ट्र अर्थात् ऊँट तथा लगुड़ से अभिप्राय है छड़ी। छड़ी ऊँट पर लदी रहती है तथा ऊँट छड़ी को ढोता है। ऊँट सवार उसी छड़ी से ऊँट को पीटता है। यह भार ढोने का ईनाम है। जिसका भार ढोओ, उसी से आहत होने की परिस्थिति में इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

3. श्वश्रूर्निर्गच्छोक्ति न्याय : श्वश्रू का अर्थ है सास (पति की जननी) तथा निर्गच्छोक्ति से अभिप्राय है भिक्षा।

एक बार एक भिखारी एक गृह में भिक्षा मांगने के लिए जाता है। उस गृह की बहू उस भिक्षुक को भिक्षा देने से मना कर देती है तथा उसे दूर भगा देती है। भिखारी उल्टे पैर लौट जाता है। तभी सास (श्वश्रू) आ जाती है और बहू को उसके इस कृत्य के लिए डांटने-फटकारने लगती है। सास उस भिक्षुक को पीछे से आवाज़ लगाकर वापस बुला लेती है। भिखारी के मन में पुनः आशा जगती है कि उसे कुछ भिक्षा मिलेगी और वह इस उम्मीद में द्वार पर पुनः आ जाता है। परन्तु सास कहती है कि "इस गृह की मालकिन मैं हूँ, मैं वरिष्ठ हूँ अतः यहाँ मेरा आदेश चलता है। मैं ही निर्णय करने की सक्षम अधिकारी हूँ। इस बहू का कोई अधिकार नहीं है कि वह तुम्हें खाली हाथ लौटा दे। अब मैं कह रही हूँ कि मैं तुम्हें कुछ नहीं दूँगी, तुम यहाँ

से शीघ्र चले जाओ। जब किसी सरल उपाय के स्थान पर जटिल उपाय से कार्य सिद्ध किया जाता है तो इस न्याय का उद्धरण दिया जाता है।

4. पिष्टपेषण न्याय : पिष्ट का अर्थ है पीसा हुआ (आटा) पेषण से अभिप्राय है अनाज को पीसना।

अनाज को पीसकर आटा प्राप्त किया जाता है। परन्तु कोई भी आटे को पुनः नहीं पीसेगा। जब कोई भी कार्य पुनः पुनः किया जाता है, या एक ही बात को बार-बार कहा जाता है तो इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

5. बकबंध न्याय : बक अर्थात् बगुला, बंध का अभिप्राय पकड़ना है। भीषण गर्मी के एक दोपहर में दो मित्र एक स्वच्छ निर्मल तथा रमणीय सरोवर के किनारे शीतल वायु के झोंकों से प्रसन्न हो रहे थे। इसी मध्य उन्होंने सरोवर में एक श्वेत बगुले को देखा और उनके मन में उसे पकड़ने की इच्छा जागृत हुई। एक मित्र ने सुझाव दिया कि बगुले के सर पर घृत लगा दिया जाए। घृत पिघलकर जब बगुले की आँखों में जाएगा तब उसकी दृष्टि क्षमता क्षीण हो जाएगी और तब सरलतापूर्वक बगुले को पकड़ा जा सकेगा। दूसरे मित्र का सुझाव था कि घृत लगाते समय ही बगुले को पकड़ लिया जाए।

जब कोई कार्य सहज विधि को त्यागकर किसी हास्यास्पद विधि से किया जाता है तब इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

6. अशोकवाटिका न्याय : रावण ने सीताजी का हरण करके उन्हें अशोकवाटिका में रखा। रावण के पास उन्हें रखने के लिए अन्यत्र स्थान भी थे, यथा कारागार, भवन इत्यादि। सीता जी को अशोक वाटिका में रखने का रावण के पास कोई विशिष्ट कारण नहीं था। उन्हें वहीं रखना था अतः रावण ने बिना किसी कारण के अशोकवाटिका को चुना।

जब किसी कार्य को संपन्न करने हेतु कई विकल्प हों और उनमें से किसी एक को बिना किसी विशेष कारण के चुन लिया जाता है, तब इस न्याय को उद्धृत किया जाता है।

तीन तेरह हो गया

अभिषेक कुमार,
हिंदी अधिकारी

खिड़कियाँ खुलीं, रात आती रही
पूर्णिमा संदेश लाती रही
बंद दरवाज़े को दिये हवा ने थपेड़े
निराश, लगाए कई फेरे
खटकती कुंडी बेबस
पकड़ चौखट बरबस

चौखट रहा अड़ा, मज़बूती से खड़ा
साल से बना, कभी था वृक्ष घना
छप्पर मौन पड़ा
बोझिल दीवार ज़मीन में गड़ा
फ़र्श ज़मीन से बेसुध जड़ा
अर्श की ऊंचाई देख चिढ़ा ।

आँख लगी थी जो देर रात को
सपनों का सवेरा हो गया
शायद हवा चली कुछ ऐसी
आँख खुली और अंधेरा हो गया
सपने जो थे, वो थे
बाकी तीन तेरह हो गया।

बेवकूफ़ी की महिमा

अमन दीप,
लेखापरीक्षक

है आप सभी का स्नेह ही
जो ये लेखनी लिख पाती है,
और समझदारों की दुनिया में
बेवकूफ़ी की महिमा बताती है।

बेवकूफ़ी कोई श्राप नहीं
यह है वरदान की छाया
इसने ही तो वरदराज को
विश्वप्रसिद्ध बनाया।

इसने ही तो कालिदास और
तुलसी को है जाया,
इसका ही तो थाम हाथ
विद्वता को इन्होंने पाया।

हर बड़ा अन्वेषक पहले
बेवकूफ़ लगता है,
अन्वेषण के बाद ये जग
बस उसका नाम जपता है।

बेवकूफ़ इस दुनिया में
बहुत नाम तो नहीं कमाते हैं,
पर वक्रत गवाह है, समझदार ही
भीषण नुकसान पहुंचाते हैं।
हाँ मानी ये बात कि जग में

आदर नहीं ये पाते हैं,
पर उतना ही सच है कि
ये दिल भी नहीं दुखाते हैं ।

बेवकूफ़ों से घृणा न करो
आने वाली पीढ़ी,
बेवकूफ़ी ही है सफलता की
सबसे पहली सीढ़ी।



नराकास अहमदाबाद के तत्वावधान में प्रधान महालेखाकार कार्यालय द्वारा आयोजित की गई पदयात्रा का प्रारंभ स्थल – कोचरब आश्रम

मेरे पटना से गुजरात स्थानान्तरण के पश्चात यहाँ फ़्रील्ड में लेखापरीक्षा का अनुभव

अमित कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (वा.)

मैंने 17 वर्ष पटना में बिताने के बाद स्थानान्तरण के फलस्वरूप कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- II), गुजरात, अहमदाबाद में कार्यभार सँभाला। यहाँ मुख्यालय में कुछ वक़्त बिताने के बाद मेरा क्षेत्रीय दल (फ़्रील्ड पार्टी) का कार्यक्रम बना और मैं फ़्रील्ड में लेखापरीक्षा करने चला गया।

क्षेत्रीय दल में जाने के बाद मुझे जब संचिकाएं (फ़ाइलें) पढ़ने के लिए मिलीं तो पता चला कि यहाँ तो सब संचिकाएं गुजराती भाषा में हैं क्योंकि गुजरात राज्य सरकार द्वारा गुजराती भाषा ही प्रयोग की जाती है। किसी-किसी जगह पर फ़ाइलों में अंगेजी भाषा का भी प्रयोग था। यह मेरे लिए एक अलग तरह की चुनौती हो गई क्योंकि गुजराती तो मुझे आती नहीं थी और फ़ाइलें पूरी गुजराती में थीं। फ़ाइलें देखते ही मैं अपने आप को पूरी तरह से असहाय महसूस करने लगा। काला अक्षर भैस बराबर।

ख़ैर, मैंने अपने आप को थोड़ा बहुत संभाला तथा किसी तरह अपने सहकर्मियों तथा यूनिट के सदस्यों से मदद लेकर फ़ाइलों को समझने की कोशिश की, पर यह प्रतिदिन की परेशानी हो गयी। जब भी जहाँ भी जाता, यही मुश्किल आ खड़ी होती। अगर कोई संचिका अंगेज़ी में मिल जाती तो खुश हो जाता और उसी से ऑडिट फ़ाईंडिंग निकालता। इस बीच मैं दो-तीन महीने घर (पटना) पर भी रहा। अंततः मैं परिवार के साथ जून -2022 में अहमदाबाद में सेटल हुआ।

जिस सोसाइटी में फ़्लैट भाड़े पर लिया वहाँ भी मुझे छोड़कर सब परिवार गुजराती थे। दोनों बच्चों को उनके बच्चों के साथ घुलने-मिलने में परेशानी होने लगी, क्योंकि वे सारे बच्चे आपस में गुजराती में बात करते थे और मेरे बच्चे उनकी भाषा नहीं समझने के कारण मूकदर्शक बने खड़े रहते। धीरे-धीरे उन दोनों ने नीचे खेलने

जाना छोड़ दिया। वे मुझसे बीच-बीच में पटना वापस जाने का भी ज़िक्र करते थे जो असंभव था।

यह मेरे लिए दोहरी परेशानी का सबब बन गया। एक तरफ़ तो मैं कार्य करने में दिक्कत महसूस कर ही रहा था, दूसरी तरफ़ परिवार भी नाखुश था। ख़ैर, समय बीतने के साथ बच्चे भी यहाँ एडजस्ट होने लगे और मुझे भी जब खाली वक़्त मिलता, गुजराती वर्णमाला तथा शब्दों को सीखने का प्रयास करने लगा। मैंने ऑफ़िस को भी अनुरोध किया कि मुझे गुजराती भाषा का प्रशिक्षण दिया जाए। इसके लिए कार्यालय प्रयासरत है।

यहाँ उल्लेखनीय है कि स्थानान्तरण प्रक्रिया का एक सकारात्मक पक्ष यह भी है कि इससे कार्मिक को नयी-नयी भाषाएं एवं संस्कृति को सीखने तथा समझने का अवसर मिलता है। इस आशा के साथ कि आने वाले समय में मैं भी गुजराती भाषा में पूरी तरह से कार्य करने में सक्षम हो जाऊँ, इस लेख को विराम देता हूँ।



पदयात्रा का प्रारंभ स्थल – कोचरब आश्रम

मैं सड़क हूँ

कश्यप व्यास,
पर्यवेक्षक

मैं सड़क हूँ।
मैं सफ़र नहीं करती।
किसी लक्ष्य, किसी गंतव्य की
ख्वाहिश नहीं रखती

मैं सड़क हूँ।
मेरी नियति, उन कदमों का भार है सहना
जिनको जल्दी है
कहीं पहुँच शिकवे-शिकायत करना।

मैं सड़क हूँ।
मैं सफ़र नहीं करती।
आँखें मूँद पड़ी रहती हूँ।
न कोई परिचित, किसी को स्मरण नहीं करती।

मैं सड़क हूँ।
मेरी नियति, उन सपनों का भार है सहना,
जिनको जल्दी थी
कहीं पहुँच, कुछ साकार था करना।

कर कोई सृजन नया

कुसुम लता,
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

ए मन !

बता तो सही, कि तू इतना परेशान क्यों है?
क्या चाहिए, क्या है छूटा तुझसे,
सब कुछ ही पा लेने का ये अरमान क्यों है?
भटकता रहता है पल-पल, दर-बदर
हर वक़्त खुद से ही तू इतना अनमन क्यों है?

संभल तो ज़रा !

एक छोटे से ठहराव से, तू इतना बेचैन क्यों है?
सब कुछ संभव है इस जग में पा लेना,
पर तेरा धैर्य एक नन्हीं-सी बूँद के समान क्यों है?
मानस है, सृष्टि-रचना समझ सकता है,
स्वयं की ज़िम्मेदारियों पर इतना क्रंदन क्यों है?

अब मान भी ले !

एक छोटे से बदलाव पर इतना क्रंदन क्यों है?
खुद को दृढ़ कर, मज़बूत बना, आगे बढ़,
निराशा के इन आंसुओं से भीगे तेरे स्वप्न क्यों हैं?
रोशनी है हर तरफ़, आँखें खोल, देख ज़रा,
फिर ये भीतर का अँधेरा, इतना सघन क्यों है?

अब बहुत हुआ,

बस, अब और रुदन नहीं, क्रंदन नहीं,
अपने सपनों को तू नई गुंजन से भर दे ज़रा !
उठ तो, मोह के बोझ को छिटक दे तू
पहचान खुद को, तुझ में ही तो स्पंदन है भरा !

मुक्त हो जा अब हर बोझ-बंधन से तू,
और इस जग को दे कोई सृजन नया !

ए मन !

बस बहुत हुआ, अब संभल जा ज़रा....
मान भी ले,
कर कोई सृजन नया !



पदयात्रा का समापन स्थल - साबरमती आश्रम

आज के आत्मनिर्भर भारत में हिंदी का महत्व

घनश्याम बिहारी शर्मा,

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत के पूरे भू-भाग में हिंदी आज संपर्क भाषा के रूप में उभरी है। हिंदी एक ऐसी डोर है जो कि भारत के सभी राज्यों और उनकी संस्कृतियों को एकसूत्र में जोड़ने का कार्य करती है। आज भारत में विचारों की एकरूपता और जनमानस के बौद्धिक विकास के लिए हिंदी का योगदान दिनानुदिन बढ़ता ही जा रहा है। भारत में जीवन के सभी आयामों में हिंदी की सार्थकता सिद्ध होती है। इस निबंध में हिंदी के लिए संवैधानिक प्रावधान, संपर्क भाषा, सामाजिक तथा आर्थिक विकास और तकनीकी एवं विज्ञान तथा साहित्य के ऊपर चर्चा की गई है।

संवैधानिक प्रावधान

यह एक अकाट्य सत्य है कि अपनी मातृभाषा के बिना कोई भी नागरिक अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास नहीं कर सकता है, इसलिए भारत के संविधान के अनुच्छेद 350-क में भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों को मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा देने के लिए सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रावधान किया गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 350-ख में भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के लिए विशेष अधिकारी की नियुक्ति का प्रावधान भी किया गया है। उपरोक्त संवैधानिक प्रावधान भारत सरकार की राजभाषा नीति में भारत की सभी भाषाओं के समावेश को दर्शाते हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 में संघ को हिंदी भाषा का विकास करने का निर्देश दिया गया है जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। ऐसा करते हुए हिन्दी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट अन्य भाषाओं की शैली का प्रयोग सुनिश्चित किया जाना है और साथ में आवश्यकतानुसार शब्द भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण कर हिंदी को समृद्ध बनाना है।

संपर्क भाषा

भारत अनेकता में एकता का देश है। यहाँ थोड़ी ही दूरी में बोली, रहन-सहन, पहनावा, खान-पान आदि में फ़र्क होता है, लेकिन एक कड़ी भारत के अधिकांशतः भू-भाग को जोड़ती है जो कि हिन्दी भाषा है।

यह विदित है कि संस्कृत का प्रभाव द्रविड़ भाषाओं पर और द्रविड़ भाषाओं का प्रभाव संस्कृत पर प्राचीन काल से ही पड़ता रहा और कालांतर में भारत की लगभग सभी भाषाओं की शैली एक जैसी हो गई। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि भारत के सभी लोगों का संपर्क एक दूसरे से था, चाहे आवश्यकता कुछ भी रही हो।

संपर्क के लिए एक दूसरे के विचारों को समझना आवश्यक होता है और इससे भाषा का विकास होता है। इसी तरह भारत की सभी भाषाओं का विकास हुआ। आज हिंदी को भारत की संपर्क भाषा माना जा सकता है। हिंदी के बिना देश की अधिकतर आबादी दूसरे भाषा-भाषियों से संपर्क साधने में अक्षम हो सकते हैं।

सामाजिक तथा आर्थिक विकास

हिंदी का भारत के सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। सामाजिक व्यवस्था को आर्थिक विकास से सीधे जोड़कर देखा जा सकता है। आर्थिक विकास के बिना सामाजिक व्यवस्था चरमरा सकती है और आर्थिक विकास के लिए जनमानस की मनःस्थिति को जानना आवश्यक है।

सरकार द्वारा विकास के लिए लागू योजनाओं का लाभ उठाने के लिए उन योजनाओं की जानकारी होना अतिआवश्यक है, इसके लिए क्षेत्रीय भाषाओं सहित हिंदी भाषा का ज्ञान होना भी आवश्यक है, जैसे कि किसानों को मौसम व कृषि से जुड़ी सूचनाएँ उन्हें अपनी भाषा या हिंदी में न प्राप्त हो तो उन्हें समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

इसके अलावा अगर बाज़ार में निर्माता को अपने उत्पाद का विक्रय करना हो तो उस उत्पाद के बारे में सभी जानकारी उपभोक्ता को होनी चाहिए। इस संदर्भ में भी हिंदी भाषा की उपेक्षा नहीं की जा सकती और विज्ञापन के विभिन्न माध्यमों में हिंदी का प्रयोग अवश्यभावी हो जाता है।

तकनीकी एवं विज्ञान तथा साहित्य

भारत में तकनीकी एवं विज्ञान में भी हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत सरकार की ओर से वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन किया गया है जो कि भारतीय भाषाओं की विभिन्न क्षेत्रों से संबन्धित शब्दावली का विकास का कार्य करता है और साथ में तकनीकी एवं विज्ञान से संबन्धित हिंदी पुस्तकों का प्रकाशन करता है।

साहित्य के विकास के क्षेत्र में हिंदी का बड़ा योगदान रहा है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि हिंदी सभी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात कर लेती है जिससे विचारों के आदान-प्रदान को नई दिशा और नया कलेवर मिल जाता है। भारत के लोग प्राचीन काल से ही दार्शनिक रहे हैं इसलिए भारतीय साहित्य में भी विभिन्न दार्शनिक भावों की झलक मिलती है। हिंदी साहित्य के महान साहित्यकारों की रचना का अनुवाद विभिन्न विदेशी भाषाओं में किया जा रहा है। इसी प्रकार अगर विदेशी भाषाओं की रचनाएँ हिंदी भाषा में ही पढ़ने को मिलें तो रचना का सही बोध भी हो पाएगा और पाठकों का वैचारिक विकास भी होगा।

कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि हिंदी भाषा निरंतर प्रगति के पथ पर है। इसमें देशज और विदेशज शब्दों का भंडार बढ़ता ही जा रहा है। और हिंदी भाषा की यह प्रकृति ही इसे पूरे विश्व में आकर्षक बनाती है जिसका लाभ लेकर भारत अधिक से अधिक आयामों में आत्मनिर्भर बनने की क्षमता रखता है। आत्मनिर्भर भारत के लिए अपनी भाषा हिंदी का योगदान हमेशा रहा है और हमेशा रहेगा।



ऑडिट भवन में 28 सितंबर 2022 को आयोजित गरबा के अवसर पर सजावट

हमसफ़र

श्री चिट्टू एम. गुप्ता,
लेखापरीक्षक

रास्ते वीरान हैं, ज़रा रुको तो सही,
सफ़र में हम भी हैं, हमसफ़र ही सही,
रुकना नहीं हमें, अभी तो चलना शुरू किया है,
मिल जाएगी मंज़िल भटकते- भटकते ही सही।

अभी पत्थर हैं नगीना भी बन जाएंगे,
यूं ही तराशते-तराशते ही सही,
मैं तैयार हूँ अपना अस्तित्व मिटाने को,
तुम मुझे संवारने की बात करो तो सही,
रास्ते वीरान हैं रुको तो सही,
सफ़र में हम भी हैं, हमसफ़र ही सही।

चेहरे पर तो नूर है बेनूर ही सही,
दोस्ती की आपसे चलो हमारा कसूर ही सही,
याद तो हैं हम चलो दूर से ही सही,
रास्ते वीरान हैं रुको तो सही,
सफ़र में हम भी हैं, हमसफ़र ही सही।

उबर जाएंगे आपके दर्दे ए जुदाई से
भर जाएंगे सभी ज़ख्म सिकुड़ते-सिकुड़ते ही सही
पर रह जाएगी एक टीस दिल में बाकी
तुम से न मिल पाने की कहीं न कहीं,
रास्ते वीरान हैं रुको तो सही।
सफ़र में हम भी हैं, हमसफ़र ही सही,

परिवार की महिमा

छत्रपाल सिंह राठौर,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अगर आप मुसीबतों पर जीत चाहते हैं, तो परिवार में प्रेमपूर्वक रहें क्योंकि परिवार एक माला है, जो प्रेम के धागे में पिरोई जाती है। सारे सदस्य इसके मोती हैं। एक मोती भी कम हो, टूट जाए, छूट जाए तो माला की सुंदरता खत्म हो जाती है।

परिवार के हर एक सदस्य का परिवार में बराबरी का महत्व होता है। हम परिवार के बिना अधूरे हैं। हम किसी भी परिस्थिति में रहें, लेकिन हमेशा परिवार को साथ रखें। इसका एक उदाहरण महाभारत में पांडवों को देखिए। कोई भी परेशानी हो, इंद्रप्रस्थ का निर्माण हो या वनवास। पांडव हर समय साथ रहते थे। जुए में हारने के बाद पांडवों को 12 वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञात वास दिया गया था। दुर्योधन उन्हें लगातार परेशान करने में लगा था। बड़े भाई के कारण पूरा परिवार वनवास में भटकने को मजबूर हो गया, लेकिन कोई भी भाई अपने बड़े भाई के विरुद्ध नहीं गया। सबने युधिष्ठिर के जुए में हार जाने के बाद भी परिवार को बिखरने नहीं दिया।

ये आश्चर्यजनक है कि पांचों भाइयों ने सभी संकटों का मिल कर सामना किया। ये परिवार की ही शक्ति थी कि इतनी परेशानियों के बाद भी उन्होंने अपना राज्य और सम्मान फिर प्राप्त कर लिया।

हमेशा याद रखें परिवार को साथ लेकर चलेंगे तो बड़े-बड़े संकट भी छोटे लगेंगे। परिवार को एक रखिए। यह हमारी सम्पत्ति भी है और हमारी प्रेरणा भी।

दूर रहना तो कोई तुम से सीखे

जितेंद्र कश्यप
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

महफ़िल में बैठे ही थे कि,
बातों में खुद का ज़िक्र ले आना कोई तुम से सीखे।
राहों में तन्हां चले ही थे कि,
साया बन के साथ चले आना कोई तुम से सीखे।

पलकें हम ने मूंदी ही थीं कि,
नींद में ख़्वाब बनकर आ जाना कोई तुमसे सीखे।
काली रात में तारों को निहार ही रहे थे कि,
चांद बन के जगमगा जाना कोई तुमसे सीखे।

ज़रा तकलीफ़ में ही थे कि,
क्ररार बनके आ जाना कोई तुमसे सीखे।
भागती-दौड़ती ज़िंदगी में ज़रा मसरूफ़ हुए ही थे कि,
फुरसत के कुछ पल बन के चले आना कोई तुमसे सीखे।

कौन कहता है कि तुम मुझसे दूर हो,
तुम तो हर आवाज़ में हो, हर आहट में हो, हर अहसास में हो।
तुम तो दूर हो के भी दिल के करीब हो,
सच, दूर रहना तो कोई तुमसे सीखे ॥

क्षेत्रीय भाषाओं का हिन्दी शब्द-भंडार पर प्रभाव

दीपक कुमार मीना,

निरीक्षक, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर कार्यालय - अहमदाबाद दक्षिण

(इस कार्यालय द्वारा दिनांक 03 अगस्त 2022 को नराकास, अहमदाबाद के तत्वावधान में आयोजित 'क्षेत्रीय भाषाओं का हिन्दी शब्द भंडार पर प्रभाव' विषय पर निबंध प्रतियोगिता में इस निबंध को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।)

प्रस्तावना :-

भारत देश में विभिन्न भाषाएँ एवं बोलियाँ बोली जाती हैं। एक अनुमान के अनुसार लगभग दस हज़ार से भी ज्यादा मातृ भाषाएँ हैं। यदि क्षेत्रीय भाषाओं की बात की जाये तो हमारे संविधान के अनुसार प्रमुख रूप से 22 क्षेत्रीय भाषाओं को अनुसूचित भाषाओं का दर्जा दिया गया है। ये सभी क्षेत्रीय भाषाएँ किसी न किसी रूप में हिंदी के शब्द भंडार में वृद्धि कर रही हैं।

हिंदी भाषा की प्रमुख विशेषता यह रही है कि ये क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों को अपने भीतर समाहित कर लेती है, वह भी अपने मूल रूप में कोई परिवर्तन किये बिना। इसी विशेषता के कारण आज हिंदी न केवल भारत देश में अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक लोकप्रिय भाषा बनकर उभरी है।

हिंदी की शब्दावली का संक्षिप्त उद्भव :-

हमें यदि हिंदी शब्द भंडार की विविधता, प्रधानता को जानना है तो यह ज़रूरी हो जाता है कि हम हिंदी भाषा का इतिहास, इसकी उत्पत्ति एवं विकास को समझें। हिंदी का उद्भव संस्कृत से माना जाता है।

हिंदी का संक्षिप्त विकास क्रमशः वैदिक संस्कृत -----> लौकिक संस्कृत -----> पालि -----> प्राकृत -----> अपभ्रंश -----> शौरसेनी अपभ्रंश ।

हिंदी भाषा प्रमुखतः शौरसेनी अपभ्रंश से ही जन्मी है।

शुरुआत में तत्सम शब्द जो कि संस्कृत के शब्द हैं, ज्यों के त्यों हिंदी में आये। जैसे कि सर्प, अग्नि, रात्रि। परन्तु समय एवं परिस्थितियों के अनुसार तत्सम शब्दों में परिवर्तन होते गए एवं अपभ्रंश के कारण उनके उच्चारण, बोलने के तरीकों में भी बदलाव आया। कुछ तद्भव शब्द जैसे कि कान्हा, रात, आग, सांप आदि ।

किसी भी भाषा के विकास में समाज का अहम योगदान रहता है। जहाँ तक हिंदी शब्दावली एवं शब्द भंडार की बात है, यह पर्यायवाची, विलोम-शब्द, एकार्थक, अनेकार्थक, समानार्थक, भिन्न रूपी समानार्थक, शब्दों का समूह होता है। समाज का भौगोलिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक परिदृश्य तथा संस्कार भाषा के शब्द भंडार को परिभाषित करता है।

भारत देश में हिंदी शब्द भंडार में वृद्धि लगभग आदिकाल (1000 ई. से 1350ई.) में प्रारंभ हुई। इस दौर में चंदबरदाई ने पृथ्वीराज रासो लिखी तो अमीर खुसरों ने नज़रान- ए- हिंद। इसी क्रम में भक्ति काल (1350 ई. से 1650 ई.) में मीराबाई ने नस्सी जी का मायरा लिखी, कबीरदास जी ने बीजक, ग्रंथावली जैसी रचनाएँ की। इनके अलावा संत रैदास, संत तुकाराम, तुलसीदास, रहीम ने भी भक्तिकाल में अपने अंतर्मन की स्पष्ट एवं सरल अभिव्यक्ति के लिए हिंदी का ही चुनाव किया।

इसके बाद रीतिकाल (1650 ई. से 1850 ई.) एवं आधुनिक काल (1850 ई. से अब तक) में अनेक रचनाकारों एवं कवियों ने हिंदी भाषा का चुनाव कर इसके शब्द भंडार को अधिक धनी एवं प्रधान बनाया। आधुनिक काल में जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पन्त आदि महान हिंदी लेखकों ने हिंदी के विकास में अपना योगदान दिया ।

हिंदी भाषा के शब्द भंडार को देखा जाये तो हम पाएंगे कि अधिकांश शब्द क्षेत्रीय भाषाओं से लिए गये हैं और यही विशेषता हिंदी को सबसे अलग बनाती है। हिंदी के विकास के क्रम में अन्य अपभ्रंश भाषाओं का भी जन्म हुआ। जैसे कि पूर्वी हिंदी जिसमें बांग्ला, उड़िया, बिहारी, आसामी भाषाएँ आती हैं, इसके अलावा पश्चिमी हिंदी जिसमें राजस्थानी, हरियाणवी, ब्रज, अवधी, गुजराती भाषाएँ आती हैं। पहाड़ी जिसमें कुमाऊँनी एवं गढ़वाली भाषा आती है।

समस्त क्षेत्रीय भाषाओं का हिंदी एवं इसके शब्द भंडार पर परोक्ष तथा अपरोक्ष रूप से प्रभाव दिखाई देता है।

सामान्यतया क्षेत्रीय भाषाओं से लिए गए शब्द देशज कहलाये। कुछ देशज शब्द उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत हैं:

- | | |
|----------|------------|
| 1. गाड़ी | 6. टन-टन |
| 2. कटोरा | 7. पों-पों |
| 3. लोटा | 8. पानी |
| 4. माथा | 9. चिड़िया |
| 5. पगड़ी | 10. थप्पड़ |

देशज शब्दों ने हिंदी के शब्दकोश को न केवल बढ़ाया है अपितु भाषा को सरल, स्पष्ट एवं नवीन भी बनाया है। यदि हम अपने परिदृश्य को बढ़ाकर देखें तो हमें ज्ञात होगा कि क्षेत्रीयता की परिभाषा को राजनीतिक सीमा रेखा से नहीं निर्धारित किया जा सकता। एक ओर हिंदी शब्द भंडार में क्षेत्रीय भाषाओं का अहम योगदान है वहीं दूसरी ओर कालांतर में भारतीय इतिहास में हुए परिवर्तन एवं अन्य राष्ट्रों के साथ संबंध ने भी हिंदी शब्दावली पर प्रभाव डाला है।

भाषा इतिहास से अछूती नहीं रह सकती। इतिहास में परिवर्तन के साथ भाषा के व्याकरण, शब्दावली, वाक्य में भी परिवर्तन आ जाता है। सर्वप्रथम जब मुग़ल भारत में आये तो अपने साथ-साथ उर्दू, तुर्की लेकर आये।

हिंदी शब्द भंडार में तुर्की भाषा से निम्न शब्द लिए गए हैं :-

- | | |
|----------|----------|
| 1. कैची | 4. बारूद |
| 2. चाकू | 5. तोप |
| 3. चम्मच | 6. बेगम |

इसी तरह से उर्दू भाषा से अनेक शब्द हिंदी शब्द भंडार में सम्मिलित हुए हैं उनमें से कुछ शब्द निम्न हैं :

- | | |
|---------|------------|
| 1. आईना | 4. इबादत |
| 2. आदमी | 5. आशिक्री |
| 3. आग | 6. अर्ज़ी |

भारतीय समाज के अन्य राष्ट्रों एवं स्थानों से व्यापार, शासन, धर्म या अन्य कारणों से संबंध बने। प्राचीनकाल से ही भारत के अरब देशों, फ़ारस, पुर्तगाल, इंग्लैंड तथा फ़्रांस से संबंध रहे हैं। इन सभी देशों की भाषाओं से हिंदी ने अपनी विशेषता अनुसार कुछ शब्द ग्रहण किये हैं।

अरबी से हिंदी शब्द भंडार में लिए गए शब्द निम्न हैं :-

1. अदालत
2. ईमान
3. इनाम
4. अल्लाह

फ़ारसी भाषा से लिए गए अनेक शब्दों में कुछ शब्द निम्न हैं :-

1. टेबल
2. कागज़
3. कानून
4. लालटेन
5. दरोगा

पुर्तगाली भाषा से लिए गए कुछ शब्द निम्न हैं :-

1. गमला
2. चाबी
3. फीता

स तरह से हम कह सकते हैं कि हिंदी शब्द भंडार को अच्छे से जानना हो तो क्षेत्रीयता के पैमाने के बजाय वैश्विक परिदृश्य में देखना होगा, केवल तभी स्पष्ट तस्वीर सामने आएगी।

हिंदी भाषा के शब्द भंडार एवं शब्दावली में सभी देशज, विदेशज शब्दों ने अहम योगदान दिया। हिंदी भाषा के महान लेखकों, इतिहासकारों, कवियों, रचनाकारों, साहित्यकारों ने समय-समय पर विभिन्न रचनाएँ कर के हिंदी को अपनी रचनात्मकता का साधन बनाया और अपना योगदान दिया। क्षेत्रीय भाषाओं को अपने अधीन ले लेने की विशेषता ही इसे भिन्न एवं विशिष्ट बनाती है। इसीलिए हिंदी

ही एक मात्र ऐसी भाषा है जो भारत देश को एकता के सूत्र में पिरोये रख सकती है।

हिंदी भाषा की विविधता एवं प्रधानता के कारण ही कहा गया है कि हिंदी अ-अनपढ़ से शुरू होती है एवं ज्ञ-ज्ञानी पर समाप्त होती है।



वर्ष 2021-22 में हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रधान महालेखाकार कार्यालय को नराकास द्वारा चल शील्ड प्रदान की गई।

एक सोच

दीपेश कुमार गुप्ता,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सफ़ेदी से दीवारों का रंग बदल सकता है,
इंसान यहाँ गिरकर भी संभल सकता है;
तू कुछ बदलने की कोशिश तो कर,
हालात क्या तू तक़दीर भी बदल सकता है;
तक़दीर बदल जाए तो फिर बचता ही क्या है?
जीवन के बदलने में लगता ही क्या है?

सोच मिटती है तो विचार मिट जाते हैं,
विचार मिटते हैं तो संस्कार मिट जाते हैं,
संस्कार मिटते हैं तो परिवार मिट जाते हैं,
परिवार मिटते हैं तो समाज मिट जाते हैं,
परिवार मिट जाए तो फिर बचता ही क्या है ?
देश के मिट जाने में लगता ही क्या है ?

एक-एक पल से एक पहर बनता है,
एक-एक पहर से दिन बनता है,
एक-एक दिन से साल बनता है,
एक-एक साल से ही जीवन बनता है,
एक-एक पल बन जाए तो फिर बचता ही क्या है?
जीवन को बनने में लगता ही क्या है?

तू अपने अंतर्मन में झाँक तो सही,
तू खुद को पहचान तो सही,

लक्ष्य तो क्या, पा सकता है तू ईश्वर को भी,
बस हिम्मत करके तू ठान तो सही,
ईश्वर मिल जाए तो फिर बचता ही क्या है?
जीवन सार्थक होने में लगता ही क्या है?



राष्ट्रीय खेल दिवस पर संयुक्त कार्यालयों के खिलाड़ियों की उपलब्धियों का प्रदर्शन

पर्यावरण संरक्षण

धनवन्ती टिब्बानी सिसोदिया,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आज के समय में हम सभी के घर में ऐसी अनेक वस्तुएँ है जिनका उपयोग हमने आज तक नहीं किया और आगे भी इनके उपयोग की कोई संभावना नहीं है। फिर भी हम ऐसी और वस्तुएँ खरीदते रहते हैं यह सोच कर कि शायद भविष्य में हम इनका उपयोग करेंगे। इसी तरीके से हम अपनी अलमारियाँ भरते रहते हैं। इससे हमारे पास सामान रखने के लिए जितनी भी जगह हो, कम ही पड़ती है। अभी पिछले वर्ष सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फ़ेसबुक पर मुझे कई ऐसे समूहों के बारे में पता चला जहाँ ऐसी वस्तुएँ जो हमारे घर में बिना काम के वर्षों से पड़ी हैं उनको दूसरे सदस्य जो कि उसका उपयोग कर सकें उन्हें वस्तु के बाज़ार मूल्य से लगभग आधे दाम दे कर या आपका दिल करे तो मुफ्त में या नगण्य राशि में भी देकर अपने घर में भी जगह बनाएँ तथा वस्तु को किसी के उपयोग में आने दें। यदि आप सोशल मीडिया प्लैटफ़ार्म का उपयोग न भी करना चाहें तो अपनी सोसाइटी में, अपने कार्यालय में, अपने दोस्तों व रिश्तेदारों के समूह बना कर भी यह कार्य कर सकते हैं। इससे नयी वस्तुएँ उत्पन्न करने से पर्यावरण पर पड़ने वाला दबाव भी थोड़ा कम होगा, इसके अतिरिक्त हमारे घर में भी जगह बनेगी।

आज के युग में इस नई अवधारणा को रिड्यूस (Reduce), रि-यूज़ (Reuse) और रिसायकल (Recycle) के नाम से भी जानते हैं। इसका अर्थ है कि :

1. आपके द्वारा उत्पादित कचरे की मात्रा कम करें।
2. वस्तुओं को बदलने से पहले जितना हो सके, पुनः उपयोग करें।
3. जहाँ भी संभव हो, वस्तुओं को रिसायकल करें।

इसके लिए जहाँ तक संभव हो हम वही वस्तु खरीदें जिसकी हमें सच में आवश्यकता हो। यदि एक ही बार के लिए आवश्यकता है तो हम इसे किसी ऐसे व्यक्ति दोस्त और रिश्तेदार जिसके पास यह उपलब्ध हो उससे ले कर भी इस्तेमाल

कर सकते हैं। हमारी इस छोटी सी पहल से हम उपलब्ध संसाधनों का इष्टतम उपयोग कर सकते हैं और नए माल के उत्पादन के लिए पर्यावरण पर बोझ कम कर सकते हैं जो बदले में सभी प्रकार के प्रदूषण को कम करेगा और पृथ्वी को रहने के लिए एक बेहतर जगह बना देगा।



जून 2022 को पर्यावरण माह के रूप में मनाया गया। इस माह पर्यावरण में हरियाली बढ़ाने के लिए ऑडिट भवन के कार्मिकों को तुलसी के पौधे वितरित किए गए।

एक दिन

नरेश सिंह,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अक्सर यह सुनने और देखने को मिल जाता है कि कुछ परिवारों में एक गृहिणी सारे दिन जी जान से कितनी ही मेहनत, त्याग, तपस्या, सेवा करे, उस सम्मान और अधिकार से वंचित रहती है जिसकी वो हक़दार है। यह तब भी जब वह परिवार में आजीविका हेतु हाथ बँटाने के साथ साथ घर में पत्नी, माँ और अपनी सास की नेक बहू के रूप में दिन रात एक कर देती हो।

एक दिन एक खुश परिवार में पति-पत्नी के बीच न चाहते हुए भी परिवार में महिला के सम्मान पर चर्चा चल ही पड़ी। उनके दोनों बच्चे भी वहीं मौजूद थे। चर्चा से आक्रोश और अहंकार की चिंगारी ज्वाला में बदल गई। यही ज्वाला उनके आपस के सौहार्द रूपी मिठास में अनबन रूपी खटास डाल गई। रात्रि के प्रहर और नींद की आगोश ने इस मामले को सांकेतिक तौर पर शांत किया। पत्नी बीमार और कमज़ोर थी। इस चर्चा को मन ही मन में रख कर रात भर करवटें बदलती रही। नींद ने उसे आगोश में कब लिया, उसे पता ही नहीं चला।

सुबह पति महोदय उठे और आज एक दिन का सारा काम स्वयं ही निपटाने का संकल्प ले लिया। देर से सोने और बीमार शरीर की वजह से पत्नी सो रही थी। महोदयश्री ने स्कूल जाने के लिए पहले बच्चों को उठाया। बच्चों की स्कूल-वर्दी पर इस्ती नहीं थी, यह देख महोदय ने इस्ती का मोर्चा लिया। मोर्चा सफल नहीं हुआ। महोदय श्री का मन अशांत था और ऊपर से इस्ती का अनुभव भी नहीं था। परिणाम ये हुआ कि वर्दी पर इस्ती का आक्रमण हो गया और उस वर्दी ने अपनी आखिरी साँस ली। फिर दूसरी वर्दी का सहारा लिया।

बच्चों को खुद नहाने के लिए कहा और नतीजा ये हुआ कि बच्चों ने अपने जीवन का अब तक का सबसे बढ़िया स्नान लिया। यानि शरीर आधा सूखा और आधा गीला। साबुन आँख-मिचौली करके बदन पर कहीं-कहीं उत्साहित नज़र आ रहा

था। इतना समय नहीं था कि महोदय उन्हें खुद नहलाएं। बच्चों ने शरीर को ऐसे ही पोंछ कर जैसे-तैसे वर्दी पहनी। इसी बीच किसी तरह महोदय भी तैयार हो गए।

अभी बच्चों का नाश्ता और टिफ़िन भी नहीं बना था। पापा ने कोशिश तो की थी लेकिन सफलता ने ठेंगा दिखाया। पापा जो ठहरे। उन्होंने अपने बटुए से पैसे निकाले और बच्चों को ये कहते हुए दे दिए कि आज आप स्कूल की कैटीन में ही नाश्ता और टिफ़िन कर लेना। बच्चों को पापा की ये बात अचंभित कर रही थी क्योंकि वो पैसों पर हमेशा बंदूक का पहरा रखते थे। बच्चे कभी बाहर खाने की इच्छा भी जताते तो पिता क्रोध का तांडव दिखाने लगते थे। बच्चों ने आज मौके का फ़ायदा उठाया और समय की नज़ाकत को देखते हुए और पैसों की मांग कर दी। पापा ने बच्चों को खुश कर दिया। करें भी क्यों न, मजबूरी जो थी।

बच्चों को लेने आई स्कूलगाड़ी अपने हॉर्न के कर्कश संगीत से ध्वनिप्रदूषण की सीमा लांघ रही थी। इसके बावजूद हॉर्न की ध्वनि महोदय के कानों के परदे रूपी किले को भेद नहीं पा रही थी। पिता की उड़ती नज़र घड़ी पर पड़ती और गाड़ी पकड़ने के लिए बाहर निकलते, तब तक गाड़ी चालक का संयम जवाब दे चुका था और वह गाड़ी को लेकर चला गया। पिता की भौहें चढ़ चुकी थीं। अब वही कहावत सार्थक हो रही थी, “खिसियानी बिल्ली खम्भा नोंचे”। लाचार पिता सिर पटकते हुए वापिस घर के अन्दर आया। समय भी तेज़ी से दौड़ लगा रहा था। चौखट पर टकटकी लगाए अखबार की भी सुध लेने का समय नहीं था।

महोदय ने ऑफ़िस की तैयारी कर गाड़ी को गुस्से में हॉर्न बजाते निकाला। हॉर्न की आवाज़ से पत्नी की नींद टूट गई। पत्नी ने खिड़की से चमकते सूरज की रोशनी से अंदाज़ा लगाया कि देर हो चुकी है। उठ कर बाहर आती तब तक महोदयश्री बच्चों को गाड़ी में बैठा कर गाड़ी को निरंतर हॉर्न बजाते ले जा चुके थे। बच्चों को ही स्कूल में देरी नहीं हुई बल्कि खुद को भी ऑफ़िस के लिए देर हो रही थी। गाड़ी तेज़ी से चला रहे थे। आज अशांत मन के उफनते हुए समन्दर में बड़ी बड़ी उलझनें, घबराहट, क्रोध, हड़बड़ी की नौकाएं हिचकोले खा रही थीं और भूखे पेट की अशांति अलग रौब जमा रही थी। आधा ध्यान गाड़ी पर और आधा ध्यान कहीं

और था । सड़क पर ऐसे गाड़ी चलाना खतरे से खाली नहीं होता और हमें कभी भी ऐसा नहीं करना चाहिए। गाड़ी चौराहा पार कर ही रही थी कि अचानक दूसरी गाड़ी से टकरा गई। गाड़ी को भारी नुकसान हुआ। भगवान ने इस बार इनका साथ दिया। वह ऐसे कि दूसरी गाड़ी का चालक दयावान और परिपक्व था । उसने गाड़ी में स्कूल की वर्दी में बैठे बच्चों को देखा और महोदयश्री की गलती पर कुछ नहीं कहते हुए आगे बढ़ गया । इससे महोदय पुलिस-मंदिर में सारे दिन की आरती में भाग लेने और उस मंदिर के प्रसाद को चखने से बाल-बाल बच गए ।

जैसे-तैसे गाड़ी को स्कूल पहुँचाया। स्कूल के दरवाज़े बंद हो चुके थे। स्कूल का प्रिंसिपल बहुत सख्त और अनुशासन-प्रिय था । किसी तरह लम्बी भावुक दयायाचना के बाद बच्चों को स्कूल में अन्दर आने की अनुमति मिली। महोदय ने ऊपर वाले का शुक्रिया किया और ऑफिस के लिए बढ़ गये। गाड़ी क्षतिग्रस्त थी अतः धीरे धीरे चल रही थी। अब किसी तरह ऑफिस में पहुँचे तो पता चला कि ऑफिस में मैनेजर साहब आज बहुत गुस्से में हैं और देर से आने वालों को अपने कक्ष में बुलाया है। महोदय श्री मैनेजर साहब के कक्ष में अपना पक्ष रखने गए। वहां वह प्रतीक्षा-कक्ष में चिंतन और मंथन के बवंडर में फंसे हुए बैठे थे। इतनी देर में फ़ोन की घंटी बजी। फ़ोन की घंटी क्या बजी मानो उनको खोया हुआ सहारा मिल गया, पटरी से उतरी गाड़ी वापिस पटरी पर आ गई हो। अक्सर इस समय उनकी पत्नी का फ़ोन आता था। लेकिन यह उम्मीद ज़िंदा होने से पहले ही मर गई। यह फ़ोन बच्चों के स्कूल से था। फ़ोन में कहा गया कि छोटे लड़के की तबीयत ख़राब है और आप जल्दी आएँ। बच्चे गर्मी में भूखे पेट स्कूल गए थे और भूख की आग में गर्मी के तड़के ने तबीयत पर असर दिखा दिया। माता-पिता को इस बात पर अवश्य बल देना चाहिए कि बच्चे नाश्ता करके ही स्कूल जाएँ। महोदयश्री तुरंत ऑफिस से स्कूल के लिए निकल पड़े। स्कूल पहुँचने पर बच्चे को डॉक्टर के पास ले जाया गया। डॉक्टर साहब ने भी आज खुराक में ज्ञान की पुड़िया देनी शुरू कर दी। वह चुपचाप सुनते रहे। कुछ समय के बाद बच्चे को आराम होने पर डॉक्टर ने बच्चे को ले जाने की अनुमति दे दी।

वह बच्चे को ले कर स्कूल पहुँचे लेकिन स्कूल प्रशासन ने बीमार बच्चे को घर ले जाने के लिए कहा। महोदयश्री ने नाकाम कोशिश के बाद उनकी बात को क़बूल

कर किया। पिता ने प्रशासन से निवेदन किया कि आप दूसरे बच्चे को भी भेज दें क्योंकि वह भी भूखे पेट ही था। उन्हें शक था कहीं उसकी तबीयत भी न बिगड़ जाए। उसके लिए प्रिंसिपल महोदय ने अनुशासन का हवाला देते हुए मना कर दिया। दूसरे बच्चे की परीक्षा थी। उसे आज बिना परीक्षा लिए भेज देना स्कूल प्रशासन ने उचित नहीं समझा और यह शर्त लगाई कि यदि आप बच्चे को ले जाना चाहते हैं तो उसकी पुनः परीक्षा नहीं ली जाएगी। अब महोदय कहीं भी नहीं जा पा रहे थे न ऑफिस और न घर। जैसे तैसे कुछ समय निकाला और दूसरे बच्चे के साथ घर पहुंचे।

सुबह से मिल रहे झटकों और थपेड़ों से वह टूट चुके थे। शरीर भूखा, थका और परेशान भी था। चेहरे के भाव बता रहे थे कि वे अपने सुबह के संकल्प के रण में हथियार डालने वाले हैं। मन में इस बात को मान चुके थे कि पत्नी के गृह के कार्य बराबरी के साथ-साथ सराहना और सम्मान के पूरे हकदार हैं। यह भी तब जब उन्होंने पूरे दिन की तो बहुत दूर, एक पहर के कार्य का सामना भी नहीं किया। तभी पत्नी की छुपती हुई नज़र उन पर पड़ी। पत्नी ने हर बार की तरह अपने त्याग और परिवार के स्नेह से विभोर होते हुए एक बार फिर खुद पहल कर स्थिति को संभाला।

अब मानो समंदर रूपी परिवार में जोड़े की यह नाव बड़े हिचकोले खाने के बाद किनारे पर सुरक्षित आ चुकी थी। स्थिति ने करवट बदल ली थी। माहौल धीरे धीरे खुशनुमा होने लगा और परिवार की गाड़ी पटरी पर लौट आई। यह वक्रतः ऐसा नहीं था कि अपनी जीत और दूसरे की हार को ढूँढा जाए। पति-पत्नी के इस मधुर रिश्ते में ऐसा होना भी नहीं चाहिए। इस पवित्र रिश्ते में दोनों पक्षों की समझदारी के बीच जीत-हार जैसे शब्दों को तलाशना परिवार की गाड़ी को पीछे धकेलने जैसा है। सभी के कार्य सम्माननीय और महत्वपूर्ण हैं।

परिवार सामूहिक दायित्व और सामूहिक अधिकारों का वह जोड़ है जो अपनी जीत और दूसरे की हार तलाशने पर इसे जर्जर, खोखला, कमज़ोर बना देता है। एक दिन नाजुक दौर में यह जोड़ खुल कर परिवार को बिखेर देता है। ऐसा होने पर उस परिवार में ही सबकी हार नहीं होती बल्कि परिवार से बने समाज और समाज

से बने देश की भी हार हो जाती है। इससे परिवार अपने बहुमूल्य और सुखद जीवन के उद्देश्य और सपनों को सार्थक नहीं कर पाते और जीवन के सच्चे आनंद से वंचित रह जाते हैं। मेरे विचार में परिवार में अकेले की बजाए सामूहिक स्वामित्व, दायित्व, नेतृत्व, भागीदारी, हित को आधार बना कर गौरव, गरिमा और गर्व का ध्यान हमेशा सर्वोपरि रखा जाना चाहिए।



ऑडिट भवन की नवनिर्मित व्यायामशाला का उद्घाटन दिनांक 23 अगस्त 2022 को श्रीमती नंदना मुंशी, अतिरिक्त उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (पश्चिमी क्षेत्र), द्वारा किया गया।

तू खोया हुआ है क्यों

प्रवीण कुमार झा,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

तू खोया हुआ है क्यों !

अब तक भटकता रहा है तलाश में,
तू किसी अनजानी सी प्यास में,
मिली नहीं है मंज़िल तुझको,
थक रहे हैं लथपथ तेरे कदम,
क्या अब हौसला तेरा टूट रहा,
तू खोया हुआ है क्यों !

उठ, कर तलाश फिर से राहों की,
जो तुझे सम्पूर्ण कर दे,
फिर कदम बढ़ा मंज़िल की ओर,
चाह में जिसकी तेरे पैर लहलुहान,
फिर से समेट अपनी बिखरी ताकत को,
तू खोया हुआ है क्यों !

तू वीर है, पहुँचेगा तू भी मंज़िल तक,
जब तक आखिरी कतरा लहू जिस्म में,
जब तक बाक़ी है एक भी सांस,
बढ़ता ही चल, तू बढ़ता चल,
तू संघर्ष कर, आगे बढ़ता चल,
तू खोया हुआ है क्यों !

जो चल पड़े हैं संघर्ष-पथ पर,
पैरों के छालों की परवाह किए बिना,

जिन्होंने खुद को तपाया है,
वक्रत की बेरहम आग में हर पल,
रच दिया इतिहास उसने ही, सोच तू
तू खोया हुआ है क्यों !

जो थक गया जो गिर गया,
फिर उठने की जिसने कोशिश न की,
मिल गया वो ही राह की धूल में,
भुला दिया वक्रत ने हारे हुए को,
हमेशा जय होती है बस जीतने से,
तू खोया हुआ है क्यों !



ओणम के अवसर पर बनाई गई रंगोली के साथ कार्यालयों के सदस्य गण

बचपन

प्रशांत कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कुछ दिन पहले, काफ़ी दिनों बाद मैं मॉर्निंग वाक करने पास के एक पार्क में गया था। पार्क के कुछ चक्कर लगाने के बाद अनायास ही मेरा ध्यान वहीं कुछ छोटे-छोटे बच्चों के साथ खेल रहे एक बुजुर्ग पर चला गया। वो शायद अपनी रिटायरमेंट की दहलीज़ पर थे। उनकी वेष-भूषा देखकर लग रहा था कि काफी अच्छे ओहदे पर रहे होंगे।

खैर कुछ देर उनके हंसी-खेल देखकर अनायास ही मुझे अपने बचपन की यादें ताज़ा हो आयीं। मुझे याद आया कि कैसे हम भी बचपन में गर्मियों की छुट्टियों में अपने नाना-नानी या बुआ के घर जाया करते थे। वैसे तो दिवाली, होली व सर्दियों के मौसम में भी छुट्टियाँ होती थीं, परन्तु गर्मी की छुट्टियों का बेहद बेसब्री से इंतज़ार रहता था। गर्मी की छुट्टियाँ इसलिए भी ललचाती थीं, क्योंकि इसमें घूमने-फिरने, खाने-पीने के साथ ही पढ़ाई की कोई चिंता नहीं होती थी। सारी छुट्टियाँ खेल-कूद कर निकल जाती थीं। नाना-नानी, मामा-मामी व बुआ का स्नेह व प्यार पाकर अभिभूत हो जाया करते थे।

शाम को खाना-खाकर छत पर सोने जाना, नानी से कहानियाँ सुनना व सुनते-सुनते ही सो जाना, ढेर सारी बातें करना बहुत अच्छा लगता था। कई बार ऐसा भी लगता था कि हमारे जाने से हमारे नाना-नानी व सगे-संबंधी हमसे भी ज़्यादा ख़ुश हो जाते थे।

इसके बाद धीरे-धीरे भौतिकता, सुख सुविधाओं की चाह ने लोगों को एक से दूसरे स्थान पर जाने को विवश कर दिया और एक नयी अवधारणा 'एकल परिवार' की संकल्पना का जन्म हुआ। सुख-सुविधाओं की आंधी में हम कुछ इस प्रकार बहने लगे कि हमें दादा-दादी, नाना-नानी के स्नेह प्यार दुलार भी स्वप्न से लगने लगे। आज एक ओर जहाँ बढ़ती आकांक्षाओं ने माता-पिता दोनों को कामकाजी बनने पर मजबूर कर दिया है, वहीं दूसरी ओर स्कूलों में मार्क्स के नाम पर बच्चों पर अत्यधिक दबाव बना दिया गया है।

आजकल स्कूलों में अभिभावकों की बढ़ती आकांक्षाओं को देखकर छुट्टियों को भी व्यवसाय में बदल दिया गया है। प्रायः समर कैम्प, विंटर कैम्प जैसे न जाने कितने ही माध्यमों से छुट्टियाँ लगभग खत्म सी होती जा रही हैं। ऐसे में बच्चे जहाँ एकाकी अनुभव करते हुए फोन व टीवी की लत से ग्रस्त होते जा रहे हैं, वहीं दूसरी तरह हमारे बुजुर्गों द्वारा सिखाये जाने वाले नैतिक मूल्यों, वार्तालाप की निपुणता आदि से भी वंचित होते जा रहे हैं। अपने आसपास के बुजुर्गों के साथ कुछ समय व्यतीत करने से जहाँ बच्चों को आत्मीयता का भाव प्राप्त होता है, वहीं बुजुर्गों के झुर्रीदार चेहरों पर भी मुस्कराहट तैर जाती है।

अतः हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि भौतिक सुख सुविधाओं के आगोश में आकर हम अपने बच्चों, बुजुर्गों व सामाजिक समरसता को पीछे तो नहीं छोड़ते जा रहे हैं।



राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर प्रथम तल पर लगाए गए प्रसिद्ध खिलाड़ियों के चित्र

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चंद्र मुर्मू के दिनांक 19 अप्रैल 2022 को ऑडिट भवन आगमन की कुछ झलकियां



ऑडिट भवन के प्रवेश द्वार पर पारंपरिक स्वागत



हिन्दी पत्रिका 'धरा गुजरी' का अनावरण



प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया गया।



स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए प्रधान निदेशक महोदय



श्री उत्सव परमार, उपनिदेशक दूरदर्शन केंद्र, अहमदाबाद द्वारा साक्षात्कार



आई.ए.एस. अधिकारियों के साथ



वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारियों के साथ



दूरदर्शन की टीम तथा अन्य अधिकारीगण के साथ

राज़ल

बाल मुकुंद त्रिपाठी
सहायक पर्यवेक्षक

ये हौसले मेरी उड़ान बन गए होते,
अगर तुम्हारे इशारे पे चल पड़े होते।

अपनी किस्मत में ही कुछ और बात थी वरना,
'मैं' और 'तुम' 'हम' भी बन गए होते।

भीगे बारिश में तो महसूस हुआ,
घर जो होता तो घर गए होते।

इतनी जूठन थी उसकी थाली में,
पेट हम सबके भर गए होते।



हिन्दी पखवाड़ा 2022

ज़िंदगी

ज़िंदगी कुदरत का दिया ऐसा तोहफ़ा है,
जैसे कि मानो ऊपर वाले ने हमें विशेष रूप से सौंपा है।
ज़िंदगी का मज़ा हर पल है,
इसे आज में जियो किसने देखा कल है ॥

ज़िंदगी में कई बार ऐसे भी मोड़ आते हैं,
कभी अच्छे तो कभी बुरे दिन भी दिखलाते हैं ।
समय हो या लोग, हमेशा एक जैसे नहीं रहते,
ये बात हमें सिखलाते हैं ॥

ज़िंदगी अपने इस खेल में,
कभी हंसाती है तो कभी रुलाती है ॥

कभी किसी की आहट में खुश हो जाना,
तो कभी किसी की मुस्कराहट में खो जाना ।
यही ज़िंदगी की रीत है,
कभी-कभी अपनों से मिली हार में भी जीत है ॥

ज़िंदगी जन्म से लेकर मृत्यु तक का एक सुनहरा सफर है,
इसमें मिलने वाले कोई राही तो कोई हमसफर है ॥

इस खूबसूरत ज़िंदगी में दिल जो चाहता है उसे करने दो,
कुछ तो लोग कहेंगे...

उन्हें कहने दो, उन्हें कहने दो ॥

फूड फ़ॉर थॉट

मोनिका दवे,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वर्ष 2002 में पी. जी. आई., चंडीगढ़ में माँ का इलाज चल रहा था। साथ वाले बेड पर हिमाचल के किसी गाँव से आई एक महिला थीं जो अपने युवा पुत्र के साथ इलाज के लिए यहाँ आई थीं। रेडियोलॉजी विभाग में मैंने अलग-अलग आयु वर्ग के कई लोगों को इतनी तकलीफ़ों से जूझते देखा कि अन्य लोगों की अपेक्षा अपनी तकलीफ़ को काफ़ी कम पाया।

इलाज के लिए भर्ती रोगियों के लिए भोजन की व्यवस्था चिकित्सालय में रहती थी। पास के बेड वाली महिला थाली में से आधा ही खाना खातीं और बाकी आधा ढक कर रख देतीं, बाद में उसका बेटा अपनी माँ द्वारा बचाया हुआ आधा खाना खाया करता। मुझे आभास हुआ कि उनके लिए किसी सुदूर गाँव से एक अपेक्षाकृत बड़े शहर में रुक कर किसी गम्भीर बीमारी का इलाज करना कितनी बड़ी चुनौती थी। आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण बीमार माँ स्वयं की थाली में से आधा खाना बेटे के लिए रखतीं जबकि कैंसर के इलाज में रेडियोथेरेपी के दौरान उन्हें स्वयं पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक भोजन की आवश्यकता थी।

थोड़ी हिम्मत जुटा कर मैंने उन्हें कहा कि मेरे मामा के घर से माँ के लिए खाना आता है, मैं अस्पताल से उनके लिए खाने की थाली नहीं लेती; अगर उन्हें आपत्ति न हो तो मैं वो थाली ले कर उनके बेटे के लिए रख दूँगी। उन्होंने कृतज्ञता व्यक्त करते हुए हामी भर दी।

इस घटना का मेरे मन पर बहुत असर हुआ, दुःख और ग्लानि से दिल भर गया। भोजन बर्बाद न करने के अपने निश्चय को मैंने और दृढ़ किया। कुछ साल पहले जब हमारे कार्यालय द्वारा सिविल अस्पताल में कैंसर का इलाज करवा रहे रोगियों के परिजनों के लिए टिफ़िन सेवा में योगदान के लिए कुछ सदस्य जुड़े तो मुझे चंडीगढ़ की यह घटना अनायास याद आ गयी। गंभीर बीमारी से जूझ रहे

लोगों के परिवार को इस प्रकार के प्रयासों से एक छोटी सी मदद तो हम में से प्रत्येक कर सकता है।

अक्सर देखती हूँ कि कुछ लोगों की खाने की पसंद-नापसंद बहुत विशिष्ट होती है। लोग पसंदीदा भोजन न मिलने पर अन्य विकल्पों को तुरंत तलाशने लगते हैं। आपने अक्सर देखा होगा, शादियों और पार्टियों में कुछ लोग अपनी थाली में अपनी खाने की सामर्थ्य से कहीं अधिक भर कर आधा खाना जूठा छोड़ देते हैं।

एक ओर जहां विश्व के लगभग 69 करोड़ लोग जो विश्व की कुल जनसंख्या का 8.9 प्रतिशत हैं, भूखे रहते हों और इस संख्या में प्रति वर्ष लगभग 1 करोड़ की वृद्धि हो रही हो, वहां उपलब्ध भोजन को बर्बाद करना एक अपराध प्रतीत होता है। हैरत की बात यह है कि भोजन की बर्बादी केवल विकसित संपन्न देशों में ही नहीं बल्कि उन विकासशील देशों में भी देखने को मिलती है जहां अब भी कुछ क्षेत्रों में लोग भूख और पौष्टिक भोजन के अभाव जूझ रहे हैं।

हमारे देश में कई संस्थाएं प्रतिदिन गरीबों को बिना मूल्य भोजन कराने के लिए सदाव्रत अथवा राम रोटी जैसी व्यवस्थाएं करती हैं। दुर्भाग्यपूर्ण सत्य है कि इन जगहों पर भी कुछ लोग थाली में भोजन जूठा छोड़ कर बर्बाद करते हैं। मुझे लगता है कि कहीं न कहीं यह व्यवहार हमारे अन्दर छिपी स्वार्थ की भावना को दर्शाता है। भारत की ही नहीं विदेशों की भी ऐसी तस्वीरें देखने को मिलती हैं जिनमें भूखे लोग कचरे के डिब्बों में भोजन ढूँढते नज़र आते हैं। बहुत दुःखद, लज्जाजनक एवं हृदयविदारक लगते हैं ऐसे दृश्या

गांधी जी के एक कथन के अनुसार दुनिया में कई लोग इतने भूखे हैं कि भगवान उन्हें रोटी के सिवाय किसी अन्य रूप में नहीं दिख सकता।

भोजन की बर्बादी केवल घरों, होटलों, रेस्तरां या पार्टियों तक ही सीमित नहीं है। भोजन के उत्पादन से लेकर उसकी खपत तक के विभिन्न चरणों में कुछ न कुछ हानि अवश्य होती है। फ़सल बोने से लेकर उगने और पकने तक की प्रक्रिया, फ़सल पकने के बाद उसे सुरक्षित रखने, विभिन्न उत्पादों के लिए आवश्यकता के अनुसार अन्न का प्रसंस्करण, तैयार उत्पादों के खुदरा विक्रय और अंततः उन उत्पादों की खपत तक के प्रत्येक चरण में भोजन की कुछ न कुछ हानि होती है।

इस हानि को कम करने के लिए यदि व्यापक कदम उठाए जाएं तो बहुत हद तक भोजन की कमी को पूरा करने में मदद मिल सकती है।

सतत विकास लक्ष्य (SDG)-12 का तृतीय टारगेट वैश्विक स्तर पर प्रति व्यक्ति खाद्य अपशिष्ट को आधा करना है। खाद्य तथा कृषि संगठन (FAO) और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) ने इस लक्ष्य की प्रगति को मापने के लिए दो सूचकांक निर्धारित किए हैं।

खाद्य हानि सूचकांक - Food Loss Index (FLI)

खाद्य अपशिष्ट सूचकांक.- Food Wastage Index (FWI)

इन सूचकांकों के अनुमानों के अनुसार वर्ष 2019 में उपभोक्ताओं के लिए उपलब्ध भोजन का लगभग 17 प्रतिशत हिस्सा घरों, खुदरा विक्रेताओं और रेस्तरां के कचरे के डिब्बे में चला गया। कचरे के डिब्बे में फेंके गए इस भोजन का लगभग 61 प्रतिशत भाग घरों द्वारा फेंका गया था।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम – United Nations Environment Programme



(UNEP) की 2021 की रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में हर साल प्रति व्यक्ति 50 किलोग्राम भोजन बर्बाद होता है। कुछ देशों में रेस्तरां में खाना बर्बाद करने पर ग्राहकों से बिल का भुगतान करते समय एक्स्ट्रा चार्ज लिया जाता है। कोई भी ग्राहक यह दलील नहीं दे सकता कि उसने भोजन की कीमत चुकाई है इसलिए वह बचा हुआ भोजन बर्बाद कर सकता है। इस तरह के दृष्टान्त

यह दर्शाते हैं कि इन देशों में देश के संसाधनों के दुरुपयोग को लेकर नागरिकों में

जागरुकता हमसे कहीं अधिक है। भोजन का मूल्य चुकाने मात्र से बर्बाद किए गए भोजन में देश के जिन संसाधनों का उपयोग हुआ है उनकी बर्बादी की भरपाई नहीं की जा सकती।

खाद्य एवं कृषि संगठन के प्रकाशन 'द स्टेट ऑफ़ फूड एण्ड एग्रीकल्चर 2019' के अनुसार विश्व भर में खुदरा स्तर तक पहुंचने से पहले ही उत्पादित भोजन में लगभग 14 प्रतिशत की हानि हो चुकी होती है।

भोजन की बर्बादी के पर्यावरण पर प्रभावों को भी नज़रंदाज़ नहीं किया जा सकता। भोजन के उत्पादन में खर्च होने वाले पानी, भूमि और अन्य संसाधनों के सीमित भंडार हैं, जिन पर भोजन की बर्बादी से अतिरिक्त और परिहार्य बोझ पड़ता है।

ट्रेकिंग पर जाते समय हमें न्यूनतम वज़न में सभी आवश्यक सामान पैक करने होते हैं ताकि हम पूरे सफ़र में प्रति दिन कितना भोजन चाहिये इसका अनुमान लगा कर शरीर को गंतव्य तक पहुंचने के लिए आवश्यक ऊर्जा के अनुसार भोज्य पदार्थों का चयन कर सकें। उन कठिन क्षणों में सही मायने में भोजन के एक एक कण का असली मूल्य पता चलता है परन्तु अक्सर वापस लौट कर आने के बाद अपनी रोज़मर्रा की सुविधाजनक ज़िंदगी में धीरे धीरे उन कठिन क्षणों में हुए अनुभवों को भूल जाते हैं।

प्रसिद्ध तमिल कवि और दार्शनिक तिरुवल्लुवर के बारे में एक कहानी कहीं पढ़ी थी। कहा जाता है कि वे भोजन करते समय एक सुई और पानी की कटोरी साथ लेकर बैठते थे। उनकी पत्नी आजीवन इसी प्रकार भोजन परोसती रहीं पर ऐसा करने का कारण उन्हें नहीं पूछ सकीं। जीवन के अंतिम दिनों में उन्होंने ऐसा करने का कारण पूछा तो वे मुस्कराते हुए बोले कि ऐसा वे इसलिए करते थे ताकि भोजन परोसते समय भूलवश यदि चावल का कोई दाना भूमि पर गिर जाए तो वे सुई से उसे उठा कर कटोरी में रखे पानी से धो कर ग्रहण कर सकें। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि तुमने परोसते समय चावल का एक भी दाना कभी गिराया नहीं और सुई और कटोरी की ज़रूरत कभी पड़ी ही नहीं।

कहते हैं बूंद बूंद से सागर बनता है। कोई बड़ा परिवर्तन लाने के लिए यदि हम सब एकजुट होकर अनेक छोटे छोटे प्रयास सतत करते रहें तो कुछ बदलाव तो

अवश्य ला सकते हैं। अधिक नहीं तो हम घरेलू स्तर पर होने वाली भोजन की बर्बादी को तो अपनी कुछ आदतें बदल कर कम कर ही सकते हैं। खाद्य पदार्थों को खरीदने से लेकर उनके अंतिम उपयोग तक प्रत्येक स्तर पर थोड़ा ध्यान दे कर हम भोजन की बर्बादी को कम कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, खाद्य पदार्थों की जितनी ज़रूरत हो उतना ही खरीदकर, खरीदे गए खाद्य पदार्थों को सुरक्षित रखने के लिए उचित तरीके से भंडारण कर के, आवश्यकता के अनुसार ही पकाकर और अपनी आवश्यकता के अनुसार ही परोसकर हम भोजन की बर्बादी को कम कर सकते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है बच्चों में अच्छी आदतें डालना ताकि उनमें भोजन के उचित उपयोग को लेकर समझदारी विकसित हो।



तो अगली बार अपनी प्लेट में बचा खाना फेंकने से पहले याद रहे कि दुनिया में करोड़ों लोग भोजन के इस एक निवाले के लिए तरस रहे हैं।

एक क्रांतिकारी का जन्मदिवस

राज कुमार सिंहल,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जन्मदिवस मुबारक हो दोस्त ! जन्मदिवस मुबारक हो दोस्त !
गूँज रहे थे यही शब्द, उस दिन चहुँ ओर, उस दिन चहुँ ओर।
सदा मुस्काने वाला, सबको हंसाने वाला,
धीर गंभीर देशभक्त वीर वो, एक दम मौन था।
तोड़ी जब उसने अपनी चुप्पी, कर डाला कइयों को मौन था,
कर डाला कइयों को मौन था।

जन्मदिवस तो वो दिन होता है न, जब हम खुली हवा में पहली साँस लेते हैं।
खुल के जीते हैं एक दूसरे को खुल के जीने की इजाज़त देते हैं।

खुली हवा में साँस लेंगे, ऐसी आज़ादी तो अभी बाकी है,
सही मायनों में तो, मेरा जन्म होना ही अभी बाकी है।
सही मायनों में तो, मेरा जन्म होना ही अभी बाकी है।

होंगे हम जब आज़ाद, लेंगे तब खुली हवा में साँस,
तब होगा मेरा वो जन्मदिवस।
वही तारीख बनेगी मेरा जन्मदिवस।
वही तारीख बनेगी मेरा जन्मदिवस।

15 अगस्त 1947 का दिन, फिर जब आया था।
वो दोस्त क्या मुस्काया, क्या खिलखिलाया था,
क्या उसने सबको हंसाया और रुलाया था।
शायद था वो, या शायद केवल यादें ही थी उसकी शेष।
मिल चुकी थी आज़ादी, जन्मदिवस बन गया था उसका विशेष।
जन्मदिवस बन गया था उसका विशेष।

खुशियाँ ऐसे शहीद क्रांतिकारियों के सच्चे जन्मदिवस की,
तब पूरे देश ने मनाई थी।

क्योंकि शहादत ही उनकी, देश का स्वतंत्रता दिवस ला पाई थी।
क्योंकि शहादत ही उनकी, उनका ऐसा जन्मदिवस ला पाई थी।
खुशियाँ ऐसे शहीद क्रांतिकारियों के सच्चे जन्मदिवस की,
तब पूरे देश ने मनाई थीं।



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कार्यालय की सजावट

सतत् विकास लक्ष्य

राजीव कुमार गर्ग,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भूमिका

वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की 70 वीं बैठक में '2030 सतत् विकास हेतु एजेंडा' के तहत सदस्य देशों द्वारा 17 विकास लक्ष्य अर्थात् एसडीजी (Sustainable Development goals-SDGs) तथा 169 प्रयोजन अंगीकृत किये गए हैं। यह कार्यक्रम 1 जनवरी 2015 से 31 दिसम्बर 2030 तक चलेगा।

क्या है सतत् विकास?

'पर्यावरण तथा विकास पर विश्व आयोग' (1983) के अंतर्गत बर्टलैंड कमीशन द्वारा जारी रिपोर्ट (1987) के अनुसार- 'आने वाली पीढ़ी की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु विकास ही सतत् विकास है।'

सतत विकास के तीन स्तंभ क्या है?

सतत विकास के तीन स्तंभ **आर्थिक विकास**, **सामाजिक विकास** और **पर्यावरण संरक्षण स्थिरता और संतुलित विकास** करने पर केंद्रित है।

सतत विकास के कितने लक्ष्य है?

सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) या "2030 एजेंडा" बेहतर स्वास्थ्य, गरीबी उन्मूलन और सबके लिए शांति और समृद्ध जीवन सुनिश्चित करने के लिए सर्वगत कार्रवाई का आह्वान करता है। 17 सतत् विकास लक्ष्य और 169 उद्देश्य सतत् विकास के लिए 2030 एजेंडा के अंग हैं।

1. गरीबी के सभी रूपों की पूरे विश्व से समाप्ति।
2. भूख की समाप्ति, खाद्य सुरक्षा और बेहतर पोषण और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा।
3. सभी आयु के लोगों में स्वास्थ्य, सुरक्षा और स्वस्थ जीवन को बढ़ावा।
4. समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही सभी को सीखने का अवसर देना।

5. लैंगिक समानता प्राप्त करने के साथ ही महिलाओं और लड़कियों को सशक्त करना।
6. सभी के लिये स्वच्छता और पानी के सतत् प्रबंधन की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
7. सस्ती, विश्वसनीय, टिकाऊ और आधुनिक ऊर्जा तक पहुँच सुनिश्चित करना।
8. सभी के लिये निरंतर समावेशी और सतत् आर्थिक विकास, पूर्ण और उत्पादक रोज़गार तथा बेहतर कार्य को बढ़ावा देना।
9. लचीले बुनियादी ढाँचे, समावेशी और सतत् औद्योगीकरण को बढ़ावा।
10. देशों के बीच और भीतर असमानता को कम करना।
11. सुरक्षित, लचीले और टिकाऊ शहर और मानव बस्तियों का निर्माण।
12. स्थायी खपत और उत्पादन पैटर्न को सुनिश्चित करना।
13. जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटने के लिये तत्काल कार्रवाई करना।
14. स्थायी सतत् विकास के लिये महासागरों, समुद्रों और समुद्री संसाधनों का संरक्षण और उपयोग।
15. सतत् उपयोग को बढ़ावा देने वाले स्थलीय पारिस्थितिकीय प्रणालियों, सुरक्षित जंगलों, भूमि क्षरण और जैव-विविधता के बढ़ते नुकसान को रोकने का प्रयास करना।
16. सतत् विकास के लिये शांतिपूर्ण और समावेशी समितियों को बढ़ावा देने के साथ ही साथ सभी स्तरों पर इन्हें प्रभावी, जवाबदेहपूर्ण बनाना ताकि सभी के लिये न्याय सुनिश्चित हो सके।
17. सतत् विकास के लिये वैश्विक भागीदारी को पुनर्जीवित करने के अतिरिक्त कार्यान्वयन के साधनों को मजबूत बनाना।

यूएनडीपी की भूमिका

- SDG1 जनवरी, 2016 से प्रभाव में आ गए तथा यूएनडीपी की निगरानी व संरक्षण में ये अगले 15 सालों तक प्रभावी रहेंगे। संयुक्त राष्ट्र की प्रमुख SDG, लक्ष्य प्राप्ति कार्य करने वाली संस्था यूएनडीपी विश्व के 170 देशों में इन लक्ष्यों की प्राप्ति पर नजर रखेगी।
- यूएनडीपी का प्रमुख लक्ष्य इन देशों में गरीबी को खत्म करना, लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को प्रोत्साहन, पर्यावरण परिवर्तन और

आपदा परिवर्तन पर कार्य तथा आर्थिक समानता प्राप्ति आदि पर ज्यादातर केंद्रित रहेगा।

- SDGs, लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये सरकारी, निजी क्षेत्र, नागरिक समाज तथा सभी लोगों को आपसी सहयोग से काम करना होगा।

वैश्विक सतत् विकास रिपोर्ट, 2022

- SDG इंडेक्स, 2022 में फिनलैंड सबसे ऊपर है, इसके बाद क्रमशः तीन नॉर्डिक देश-डेनमार्क, स्वीडन और नॉर्वे हैं।
- इस रिपोर्ट में 163 देशों में भारत 121वें स्थान पर है। यह वर्ष 2020 में 117वें और 2021 में 120वें स्थान पर था।

निष्कर्ष

सतत् विकास लक्ष्यों का मुख्य उद्देश्य विश्व से गरीबी को पूर्णतः खत्म करना तथा सभी समाजों में सामाजिक न्याय व पूर्ण समानता स्थापित करना है। भारत को भी गंभीरता से इन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु कार्य करना चाहिये।



ओणम के अवसर पर सद्दा ग्रहण करते हुए कार्मिक

श्री महावीर जन्म प्रसंग

रीना अभ्यंकर
पर्यवेक्षक

जैनों के पर्यूषण पर्व का उत्सव आठ दिवस का होता है। पांचवां दिवस “महावीर जन्म” कहलाता है। इस दिन महावीर जी का जन्म नहीं हुआ था लेकिन जैनों के चौबीसवें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी जन्म प्रसंग का वाचन (पठन) किया जाता है। जैन लोग अति उत्साह से इस प्रसंग को मनाते हैं।

महावीर जन्म वाचन के दिन की कहानी मेरी जुबानी:

पर्यूषण का पांचवां दिन था। सुबह का प्रतिक्रमण सूर्योदय से पूर्व ही समाप्त हो गया। हमारे जैन मंदिर (देरासर) में दादा के दरबार में शाही ठाठ-बाट से प्रभुजी का प्रक्षाल और पूजा शुरू हो गई। सूर्योदय से पहले भगवान् जन्म की जानकारी देने के लिए प्रभातफेरी की मंगल शहनाई नगाड़े के सुर श्री शांतिनाथ दादा को चौगान में सुनाई दिए। प्रभातफेरी निर्धारित मार्ग पर आगे बढ़ती गई, लोग जुड़ते गए, कारवां बनता गया। रास्ते में आने वाले सभी घर-परिवारों को प्रभावना करते-करते, कोई रोकड़ रकम, कोई मिठाई देते-देते प्रभातफेरी जब वापस आई तो जैन साधु – साध्वी को भी विस्मित कर गई अहा ! इतने लोग!

हर घर तोरण.. हर हृदय हर्ष... मानो जैसे नए साल का दिवस हो ।

बाद में भक्तामर स्तोत्र का पठन और गुरु महाराज का व्याख्यान। श्री महावीर स्वामी की माता त्रिशलादेवी के स्वप्नों का वर्णन, स्वप्न-पाठन आदि। हर देरासर में प्रभुजी की अंगरचना तथा देरासर की साज-सज्जा। पूरा संघ यथाशक्ति कार्य करता है। दोपहर होते -होते हर घर चूरमा के लड्डू आदि का भोजन। फिर शुरू होती है भगवान के जन्म पठन की तैयारी। आबाल-वृद्ध सब सज-धज कर उपाश्रय पहुंचे। गुरु महाराज ने अपना स्थान ग्रहण किया।

अब सही समय आ गया। बोली शुरू हुई.... प्रभुजी की पीढ़ी के मुनीम बनने की, चौदह सुपन उतरने की, सुलाने की, सोने का हार पहनाने की, गुलाबदानी से गुलाब-जल छिड़कने की, सुघोषा घंट बजाने की, प्रभुजी को लेकर रथ में बैठने की, सारथी बनने की। सब के मन में एक ही बात! कौन प्रभुजी के माता-पिता बन कर प्रभुजी

को पालने में सुलायेंगे, बाद में अपने घर ले जायेंगे। संगीतकारों के खेल, त्रांसे, नगाड़े और गीतों के साथ बोली आगे बढ़ती गई। धन-वर्षा होती रही। भक्ति और श्रद्धा के अनुसार लाभान्वित होते गए लोग। “त्रिशला नंदन वीर की जय बोलो महावीर की” भक्ति गीत चलते गए। बोली समाप्त.... प्रभु जन्म वाचन की बेला आ पहुँची।

आगे वर्णन करने से पहले मैं आप को बताना चाहूंगी जब महावीर स्वामी माता त्रिशला के गर्भ में थे तब माता ने चौदह स्वप्न देखे थे जिनका जैनियों के ग्रन्थ “कल्पसूत्र” में वर्णन है।



स्वप्न कथन :

1. **हाथी:** हे माता, आप का पुत्र जगत में हाथी की तरह निर्भय होकर विचरेगा ।
2. **वृषभ :** आने वाला वीर पुत्र अपने ज्ञान और चरित्र के प्रभाव से विषय-कषाय रूपी कीचड़ में, संसार में फंसे हुए अनेक जीवों को बाहर निकालेगा ।
3. **सिंह:** यह शूरवीर पुत्र सिंह की तरह पराक्रमी बनेगा एवं शासन की धुरी संभालेगा। निडर-निर्भय बन कर विचरेगा ।
4. **लक्ष्मी:** हे माता! आपका पुत्र भौतिक लक्ष्मी का त्याग कर के शाश्वत मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त करेगा।
5. **पुष्प की दो माला :** आने वाला बालक बड़ा होकर आगार और अणगार धर्म समझा कर तीर्थ की स्थापना करेगा ।
6. **चंद्र :** हे माता आप का पुत्र चंद्र समान शीतल और सौम्य होगा ।
7. **सूर्य:** आने वाला बालक जगत से मिथ्यात्व का अँधेरा दूर कर के दीपक एवं सूर्य के सामान तेजस्वी बनेगा ।
8. **ध्वजा :** जिस तरह मंदिर के ऊपर लगी ध्वजा से मंदिर का पता चलता है, उसी तरह आप के पुत्र की यश-कीर्ति दूर तक फैलेगी ।
9. **कलश:** अमृत के कलश से अमृत पान कराया जाये, वैसे ही आपका पुत्र जगत को जिनवाणी रूपी ज्ञानामृत पिलाएगा ।
10. **पद्म सरोवर :** शुभ प्रेम का प्रतीक है। आने वाला बालक जहाँ भी जायेगा, प्रेम और प्रसन्नता फैलाएगा ।
11. **क्षीर समुद्र :** हे माता! आपका पुत्र समुद्र की तरह अनेक जीवों का आधार और नाथ बनेगा।
12. **देव विमान :** सद्गति का प्रतीक है। आप का पुत्र अनेकों की सद्गति का निमित्त बनेगा। स्वयं सिद्धगति पाएगा ।

13. **रत्न राशि** : भौतिक समृद्धि को पाने के लिए लक्ष्मी जी का महत्त्व है, इसी तरह आत्मिक गुणों को प्रकट करने हेतु रत्न राशि का महत्त्व है।
14. **अग्नि** : हे रत्न कुक्षिणी माता, जिस तरह अग्नि के प्रज्वलित होते ही अंधेरा विदा लेता है, उसी तरह आप का पुत्र केवलज्ञान और केवलदर्शन को प्राप्त कर के दुनिया का प्रकाश पुंज एवं तारणहार तीर्थकर बनेगा।

और स्वप्न ऊपर से सुपन के रूप में उतरना शुरू हो गया। अक्षत से उनका स्वागत, सोने की माला, फूलों की माला, सुमधुर संगीत एक-एक कर के चौदह सुपन उतरे । वातावरण में खुशी ही खुशी उत्साह वाह !

गुरूजी के मुख से शुभ मांगलिक सुना। जन्म वाचन शुरू हुआ। प्रभु जी के जन्म पठन का महत्त्व समझाते हैं। चौबीस भगवान के गर्भकाल, सात ग्रहों का वर्णन, पृथ्वी पर के उस समय के वातावरण का वर्णन, उस समय के लोगों का वर्णन और अंत में प्रभु जन्म की सूचना देते हुए गुरु भगवंत कहते हैं "त्रिशला क्षत्रियाणी ने पुत्र रत्न को जन्म दिया।" इसी के साथ उपाश्रय में हाज़िर श्रावक श्रीफल तोड़ते हैं। सभी लोग नाचते-गाते अपनी खुशी व्यक्त करते हैं। अंतर्दानी से गुलाब-जल छिड़का जाता है । श्रीफल पालने में रखकर सब पालना झुलाते हैं । ऐसा वातावरण हो जाता है मानो सही में त्रिभुवनपति का जन्मोत्सव मनाया जा रहा हो। बाद में चौदह सुपन, पालने के साथ रथ में रखकर जिस श्रावक ने सर्वाधिक बोली लगाई हो, उस के घर ले जाते हैं। रात को प्रतिक्रमण के बाद श्रावक के घर भक्ति का प्रसंग आयोजित किया जाता है, जगराता होता है और अखंड दीपक रखा जाता है। पूरा संघ दर्शनार्थ उनके यहाँ जाता है और दर्शन के बाद श्रावक यथाशक्ति प्रभावना करते हैं। दूसरे दिन सुबह शुभ-मुहूर्त में सुपन, पालना सहित भगवान को ढोल नगाड़े के साथ वापस उपाश्रय में रखकर आते हैं। भगवान के जन्म के साथ ही लोरी गाई जाती है जिसे "हालरडुं" कहते हैं । एक सौ आठ दिए से आरती की जाती है ।

इस प्रकार भगवान महावीर स्वामी के जन्म का पठन प्रसंग मनाया जाता है।



29 अप्रैल 2022 को कार्यालय में कोविड-19 वैक्सीन कैम्प आयोजित किया गया।

संघर्ष का फल; आज नहीं तो कल

रूपेश रंजन तिवारी,
लेखा परीक्षक

जिसने भी संघर्षों की छाया में पलना सीखा,
जिसने भी कर्तव्यों की है भट्टी में जलना सीखा,
जिसने भी हिम बीच बैठ हर्षित हो गलना सीखा,
ऐसों ने पुरुषार्थ से अपनी मुश्किल को दलना सीखा।

क्या वैभव के बीच पले व्यक्ति को दुख का अनुभव है?
क्या बंध्या को प्रसव-दर्द का अनुभव हो, यह संभव है?
क्या कपूत कोई हो सकता निज कुल का कुल-गौरव है?
क्या कोई विप्लव बन सकता किसी हाल में उत्सव है?

किसी युद्ध में जीत उसी की होती है जो लड़ता है
हर बाधा में जो भी निर्भय होकर आगे बढ़ता है
प्रगति के उत्तुंग शिखर पर वह व्यक्ति ही चढ़ता है
श्रम करनेवाला व्यक्ति इतिहास अनोखा गढ़ता है।

नहीं कभी संघर्ष से ऊबो यही सफलता का है राज़
इसके ही दम पर कोई भी रंक पहन लेता है ताज
बनता है संघर्षशील ही, जानो! जन-जन की आवाज
बिना किसी संघर्ष के जीवन, लक्ष्य पे होता वज्राघात।

वर्तमान युवा पीढ़ी का अवलोकन

रोशन लाल मीना,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आँखों में उम्मीद के सपने, नयी उड़ान भरता हुआ मन, कुछ कर दिखाने का दमखम और दुनिया को मुट्ठी में करने वाला; यही एक युवा पीढ़ी की परिभाषा है। यह उम्र का वह दौर होता है जो न केवल स्वयं का अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र का भविष्य तय करता है। आज के भारत को युवाओं का देश कहा जाता है क्योंकि सम्पूर्ण विश्व में सर्वाधिक युवा जनसंख्या इसी देश में है, जो किसी राष्ट्र को प्रगति के पथ पर ले जाने के लिए पर्याप्त है।

परंतु जब हम इस पीढ़ी पर गहनता से विचार करेंगे तो वास्तविकता का एक अलग स्वरूप देखने को मिलेगा। जिस युवा से उसके परिवार, समाज तथा राष्ट्र को उम्मीद है, वह स्वयं दिग्भ्रमित है। उसे नहीं पता क्या करना है, क्या चल रहा है, भविष्य क्या होगा। इन सब से अंजान बन बैठा है। युवा हर विषय पर मनमानी करता है। न किसी से कुछ कहना, न किसी की सुनना। हमेशा हठी रूप धारण किए रहता है। लालच, द्वेष, उन्माद, नशा, अवसाद, धैर्य का अभाव, इन सबों में घिरा रहता है, जिससे उसे वास्तविकता का ज्ञान नहीं हो पाता।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि इंटरनेट क्रांति ने हमारे दैनिक जीवन को बहुत सरल बना दिया है। हम घर बैठे बैंकिंग, शिक्षा, सिनेमा, मनोरंजन, समाचार सभी सुविधा का आनंद ले पाते हैं। वस्तुतः इंटरनेट ज्ञान का अथाह सागर है। परंतु अधिकांश युवा मनोरंजन की तरफ अग्रसर हैं। अधिकांश समय सोशल मीडिया पर अपनी काल्पनिक छवि बनाना इनको अच्छा लगता है। अगर कोई वरिष्ठ कुछ भी बताए तो इसे अपना अपमान समझने लगते हैं।

आज के युवा अपनी जिम्मेदारियों से विमुख होकर राजनैतिक मुद्दों की तरफ आकर्षित हो रहे हैं, मामले की तह का ज्ञान हुए बिना तुरंत आक्रोशित हो जाते हैं। अतः माता-पिता को भी अपनी दैनिक व्यस्तताओं से समय निकालकर बच्चों के

लिए समय निकालना आवश्यक है, क्योंकि यही आगे जाकर युवा बनेंगे व देश का भविष्य बनेंगे।

माता-पिता का बच्चों के प्रति प्रेम स्वाभाविक है, परंतु इस प्रेम के चलते हर जायज़-नाजायज़ मांग को पूरा करना किस हद तक उचित है? इसलिए देश के ज़िम्मेदार नागरिक होने के नाते हमारा कर्तव्य बनता है कि समाज में इस इस प्रकार का माहौल बनाया जाए जिससे युवाओं को मार्गदर्शन मिलता रहे, उनमें अच्छे संस्कारों की उत्पत्ति हो, वे विवेकशील बनें, उनमें सही निर्णय लेने की क्षमता का विकास हो, चूंकि युवा पीढ़ी के बलिष्ठ कंधे पर आने वाले कल की ज़िम्मेदारी है, लेकिन इस कर्तव्य का निर्वहन तभी संभव होगा जब भावी राष्ट्र प्रणेता बौद्धिक, मानसिक व शारीरिक स्तर पर पूर्णतः संतुलित व स्वस्थ हो।



पदयात्रा में सम्मिलित होने के लिए नराकास सदस्य कार्यालयों को स्मृति-चिह्न प्रदान किए गए।

माँ की याद

लोकेश कुमार मीना,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कल रात में माँ का कॉल आया,
मन के दुखड़े को धीरे से सुनाया।
बेटा याद बहुत आती है,
कि बेटा याद बहुत आती है कब आएगा तू,
सुनकर मेरी कलम रुक सी गई है,
भला माँ की ममता को शब्दों में कैसे समेटूँ।

रख दे तू सर पर हाथ तो,
लगता है खुदा का फरमान मिल गया है।
जानती हैं वो कि उन्हीं के लिए इतनी दूर आया हूँ।
भला हमें इस दुनिया से क्या लेना।
मैंने माँ से कहा थके होंगे आप आराम करो, सुबह बात करेंगे।

ये सुनके माँ के आँखों से आंसू छलक आए,
जो मुझे ऑडियो कॉल पर भी नज़र आ रहे थे।
सोचकर कि कहीं बेटे को दुःख का पता न चल जाए,
फ़ोन को दूर रख दिया भला मुझसे क्या छिपाओगी माँ।

सिसकियों की आवाज़ कानों को सुनाई दे रही थी,
सुनकर आँखों से आंसू खुद-ब- खुद गिर रहे थे।
लोग कहते हैं बड़े होने के बाद माँ बाप को भूल जाते हैं,
पर मुझे तो याद ही अब आने लगी है।
याद आता है वो बचपन जब माँ खुद कोरी रोटी मिर्ची से खाती थी
और हमें दूध से खिलाती थी।
याद आती हैं वो बातें जब माँ सोने से पहले हमें प्यार से सुलाती थी।

लेखन कार्य का महत्त्व

शिवानंद,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

हम सभी पुस्तकें पढ़ते-पढ़ते ही बड़े हुए हैं और हम सब के सरकारी नौकरी पाने का आधार भी शायद पुस्तकें ही हैं, और सभी प्रकार की पुस्तकों का संबंध लेखन कार्य से अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ है। अतः कम से कम शिक्षित लोग तो लेखन के महत्त्व को समझ ही सकते हैं। लेखन एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य कार्य है। लेखन के बल पर ही सभी प्रकार के विचार, दर्शन, ज्ञान और विज्ञान की पहुँच जन-जन तक संभव हो पाई है। बड़े-बड़े पुस्तकालयों में रखी हुई हज़ारों-लाखों पुस्तकों का मुख्य स्रोत लेखन कार्य ही है।

लेखन कार्य बहुत ही परमार्थ का कार्य है। लेखन के माध्यम से लेखक अपने किसी अनुभव, ज्ञान, शोधकार्य, प्रेक्षण आदि की जानकारी अन्य व्यक्तियों के साथ साझा कर सकता है जिससे कि अन्य लोग भी उससे लाभान्वित हो सकें। इस तरह से लेखन कार्य परमार्थ कार्य के साथ ही पथ-प्रदर्शन का कार्य भी करता है। कोई भी लेखक केवल अपने लिए नहीं लिखता होगा, लेखन का मुख्य उद्देश्य ही है अपने पास मौजूद जानकारी को दूसरों के साथ साझा करना। लेखन कार्य करने के लिए मिलने वाली ऊर्जा और प्रेरणा का मुख्य स्रोत उसके पीछे छिपी परोपकार और जनकल्याण की भावना ही होती है। लेखन का उद्देश्य भी जनकल्याण ही होना चाहिए।

अगर किसी व्यक्ति के पास कुछ ऐसी जानकारी अथवा अनुभव है जिसे उसने काफी कठिन परिश्रम और समय देकर अर्जित किया है, जो अपने आप में अद्वितीय है और वह दूसरे व्यक्तियों के लिए हितकर साबित हो सकता है तो इसके बारे में अवश्य लिखा जाना चाहिए। इस तरह से प्रत्येक व्यक्ति अपने ज्ञान, कौशल और अनुभवों के बारे में लिखकर अगली पीढ़ी के लिए एक अमूल्य विरासत छोड़ सकता है।

विभिन्न चीज़ों का अविष्कार करने वाले वैज्ञानिक, विभिन्नसिद्धांतों का प्रतिपादन करने वाले दार्शनिक, गणितज्ञ, शिक्षाविद् आदि अगर अपने शोध कार्य अथवा सिद्धांतों को हमसे साझा नहीं करते तो शायद आज भी हम यही समझते कि सूर्य पृथ्वी का चक्कर लगा रहा है, सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण किसी दैवीय प्रकोप की वजह से होता है, और न जाने कितनी ही अज्ञानता में जी रहे होते। अगर लुई ब्रेल ने ब्रेल लिपि का अविष्कार नहीं किया होता और उसे लिपिबद्ध नहीं किया होता तो दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए पढ़ाई-लिखाई आज भी सपना होता।

अगर कबीर, सूर, तुलसी, जायसी, प्रसाद, प्रेमचंद, भारतेन्दु, पन्त, निराला, महादेवी वर्मा, माखन लाल चतुर्वेदी आदि ने अपनी लेखनी नहीं चलाई होती अथवा उनके विचारों को लिपिबद्ध नहीं किया गया होता तो हम आज हिंदी साहित्य, उसके स्तर और ऊँचाइयों से सर्वथा अनभिज्ञ होते। इसी तरह चाहे कोई भी भाषा हो उसे समृद्ध बनाने में उस भाषा के कवि एवं लेखकों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। अतः हम भी अपनी अगली पीढ़ी को कुछ देकर अपना कर्ज कम कर सकते हैं। अपने ज्ञान और अनुभव को दूसरों को बांटने के लिए लेखन एक बहुत ही अच्छा और आसान माध्यम है।

अधिकांश लोग समझते हैं कि लेखक हर कोई नहीं बन सकता, बहुत ही प्रकांड विद्वान और विलक्षण प्रतिभा के धनी लोग ही पुस्तकें लिखते होंगे, जबकि सच्चाई कुछ और ही है। कोई भी व्यक्ति जो लिखने की चेष्टा कर सकता है, वह लिख सकता है। इसके लिए किसी विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है। बस अपने ज्ञान और अनुभव के बारे में अपनी भाषा में लिखने की आवश्यकता है। किसी भाषा में लिखने के लिए उस भाषा के विशेष अध्ययन की आवश्यकता नहीं है, बस ज़रूरत है अपने विचार को सरल तरीके से व्यक्त करने की। यह बात अलग है कि किसी भी क्षेत्र में महारत हासिल करने के लिए और कीर्ति प्राप्त करने के लिए सम्बंधित क्षेत्र में लगातार बने रहना और अभ्यास करते रहना बहुत ज़रूरी है। एक ही दिन में कोई अच्छा लेखक, विचारक, दार्शनिक अथवा खिलाड़ी आदि कुछ भी नहीं बन सकता।

किसी को गुमराह करने और केवल व्यक्तिगत हितों को साधने के लिए किये जाने वाले लेखन कार्य की निंदा की जानी चाहिए। लेखन के क्षेत्र में हमेशा से एक विडंबना रही है कि कुछ लोग बिना कुछ किए ख्याति प्राप्त करने या प्रसिद्ध होने के लिए कहीं से किसी लेखक की कृतियों के कुछ अंशों को लेकर उसकी सहमति के बिना ही उसे अपनी मूल कृति बताकर प्रकाशित करा देते हैं, यद्यपि ऐसे कृत्यों को साहित्यिक चोरी माना जाता है और ऐसा करना दंडनीय अपराध भी है। अतः यदि हम स्वयं द्वारा लिखे जा रहे लेख अथवा पुस्तक में किसी खास पुस्तक अथवा साहित्य के कुछ अंश दृष्टान्त के रूप में लिख रहे हैं तो हमें वहां पर सम्बंधित स्रोत सामग्री अथवा लेखक या विचारक के नाम का उल्लेख अवश्य कर देना चाहिए।

लेखन कार्य ऐसा है जिसके लिए किसी को प्रेरित और प्रोत्साहित नहीं किया जा सकता, जब तक उसके अन्दर से ऐसा करने का भाव नहीं उत्पन्न होता है। अगर कोई व्यक्ति किसी प्रोत्साहन के वशीभूत लेखन कार्य करता है तो उसके लिए कठिन होगा कि वह अपने लेखन कार्य को बिना प्रोत्साहन के भी जारी रख सके क्योंकि इसके लिए अन्दर से स्वयं प्रेरित होना आवश्यक है। लेखन कार्य उद्देश्यपूर्ण होना भी बहुत ज़रूरी है, चाहे वह उद्देश्य लोगों को शिक्षित और जागरूक करने का हो, समाज में परिवर्तन लाने का हो, किसी सामाजिक समस्या के निवारण का हो, किसी गलत धारणा अथवा अन्धविश्वास को समाप्त करने का हो, लोगों मनोरंजन करने का हो या लोगों हंसाने का हो। ऐसे अनेकों उद्देश्य हमारे पास मौजूद हैं जिन पर लेखन कार्य किया जा सकता और इसके द्वारा अगली पीढ़ी का मार्गदर्शन किया जा सकता है।

कार्यालय और मेरा अनुभव

संतोष कुमार,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

जीवन में अनुभव का होना बहुत ज़रूरी है। कोई भी व्यक्ति अपने आप में सम्पूर्ण नहीं होता। सभी अपने जीवन के हर मोड़ पर एक नया अनुभव लेते हैं। किसी ने ठीक ही कहा है "जीवन केवल एक अनुभव है, न कुछ उससे अधिक और न कुछ उससे कम"।

मैं बिहार के एक छोटे से गाँव में बहुत ही सीमान्त परिवार में पैदा हुआ जहाँ परिवार के लोग बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा देने में भी सक्षम नहीं थे, लेकिन उनके जीवन के प्रति समर्पण, बच्चों को मेहनत- मज़दूरी करके कुछ अच्छा बनाने की इच्छा, शुभचिंतकों का सहयोग और ईश्वर की कृपा ने मुझे भारत सरकार एवं इस कार्यालय में सेवा देने का अवसर दिया।

मेहनत और दृढ़ इच्छाशक्ति के वजह से पहली बार नवम्बर 2000 में रेलवे में तकनीशियन के रूप में मेरा चयन हुआ। जिस दिन मुझे परिणाम की जानकारी मिली उस पूरी रात मुझे नींद नहीं आयी थी और मैं पूरी रात एक टूटी सी खटिया (चारपाई) पर लेटा रहा। मैंने अपने व्यावसायिक जीवन की शुरुआत मार्च 2001 से रेलवे में एक तकनीशियन के रूप में की लेकिन जल्द ही मेरा चयन लेखा परीक्षक के रूप में होने के कारण, मुझे फरवरी 2003 से महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, राजकोट में कार्य करने का अवसर मिला। इस कार्यालय ने मुझे अनेक अवसर दिए जिनकी वजह से आज मैं इस स्तर तक पहुँच सका जिस की कल्पना मैंने अपने बचपन में कभी नहीं की थी। अतः मैं भी अपने व्यावसायिक जीवन के कुछ अनुभव आप सभी के साथ साझा करना चाहता हूँ।

इस कार्यालय में मेरी नियुक्ति के बाद पहली तैनाती लेखापरीक्षक के रूप में आयकर राजस्व लेखापरीक्षा के मसौदा पैराग्राफ अनुभाग में हुई। उस अनुभाग के तत्कालीन वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी श्री बी. एम. देसाई साहब, जो मेरे इस कार्यालय के प्रथम गुरु थे, ने मुझे मसौदा पैराग्राफ बनाने और उसे प्रस्तुत करने के

तरीके सिखाये और वह प्रथम अनुभव मेरे लिए आगे चलकर अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ।

कुछ समय पश्चात, अहमदाबाद में एक नए वरिष्ठ उप महालेखाकार, स्थानीय निकाय लेखा एवं लेखा परीक्षा (LBAA) कार्यालय की स्थापना हुई जिसके कारण राजकोट में जनवरी 2006 तक कार्य करने के पश्चात् मुझे फरवरी 2006 में अहमदाबाद आकर कार्य करने का सुनहरा अवसर मिला। मैं अहमदाबाद इसलिए आना चाहता था क्योंकि यह जगह मेरे पैतृक स्थान से राजकोट की अपेक्षा 225 कि. मी. कम दूरी पर था। यह कार्यालय भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के मार्च 2012 में पुनर्गठन तक अस्तित्व में रहा और इस अवधि में मैंने कार्य की कई बारीकियों को सीखा। इसमें विशेष रूप से गुजरात की पंचायती राज संस्थाओं एवं शहरी स्थानीय निकायों की कार्यशैली के साथ-साथ उनकी लेखा परीक्षा का अनुभव प्राप्त हुआ।

उस समय यह कार्यालय गुजरात के स्थानीय निधि लेखा परीक्षा कार्यालय को पंचायती राज संस्थाओं एवं शहरी स्थानीय निकायों से सम्बंधित वार्षिक तकनीकी निरीक्षण प्रतिवेदन बनाया करता था। मुझे इस कार्य के लिए हमारे कार्यालय ने उपयुक्त समझा और मैंने तत्कालीन उप महालेखाकार /वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदय के सुझावों के आधार पर एवं अपने सहयोगियों के योगदान के कारण हमने गुजरात सरकार को 05 तकनीकी प्रतिवेदन दिए।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के मार्च 2012 में पुनर्गठन के बाद अप्रैल 2012 से मुझे सामान्य क्षेत्र लेखा परीक्षा में कार्य करने का अवसर मिला, जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, पुलिस एवं सामान्य क्षेत्र के अन्य विभागों की लेखापरीक्षा एवं उससे सम्बंधित लेखा परीक्षा प्रतिवेदनों, मसौदा पैराग्राफ का पुनरीक्षण करने का अनुभव प्राप्त हुआ, साथ ही कुछ निष्पादन लेखा परीक्षा एवं विषयगत लेखा परीक्षा का कार्य करने का भी अवसर प्राप्त हुआ।

अप्रैल 2016 में लेखा परीक्षा अधिकारी में पदोन्नति के उपरांत मेरी तैनाती प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), अहमदाबाद के कार्यालय के केंद्रीय लेखा परीक्षा (व्यय) अनुभाग में की गयी। इस अनुभाग में मुझे क्षेत्रीय लेखापरीक्षा एवं मुख्यालय दोनों कार्य करने का अवसर मिला। क्षेत्रीय लेखा परीक्षा के दौरान, विशेषकर

कोविड-19 के समय (जुलाई 2020), राष्ट्रीय डेयरी योजना-1 का राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड, आणंद की लेखा परीक्षा करना अविस्मरणीय है। इस कार्य के लिए हमें दिल्ली मुख्यालय, एवं कार्यालय के द्वारा प्रशंसा भी मिली। इस कार्यकाल में कई मसौदा पैराग्राफ एवं विषयगत लेखापरीक्षा के प्रतिवेदनों का भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदनों में समावेश हुआ जिसके कारण मुख्यालय दिल्ली के साथ इन मुद्दों पर पारस्परिक विचार विमर्श करने का अवसर भी मिला।

अतः मार्च 2001 में तकनीशियन के रूप में व्यावसायिक जीवन के प्रारंभ से आज जीवन के अनेक अनुभवों को हासिल कर चुका हूँ और आगे भी अनुभव हासिल करता रहूँगा। इसके लिए मैं अपने वरिष्ठ अधिकारियों, सहयोगियों के साथ-साथ कार्यालय का सदा ऋणी रहूँगा।



हिन्दी पखवाड़ा 2022 के अवसर पर बनाई गई रंगोली

वो भूली-बिसरी बचपन की यादें

संतोष झा,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

वो भूली-बिसरी बचपन की यादें
खेल-खिलौनों की बारातें,
भागने छुपने की बातें
सपनों भरी वो रातें।

क्या तुमने देखा कहीं उन्हें
जो साथी थे मतवाले,
कभी चिड़िया, कभी तितलियों के संग
झूमते, नाचते, गाते।

नहीं थी फ़िक्र उन्हें किसी की,
अपनी धुन में गुनगुनाते,
देख उनकी शरारत बड़े गुराते
लेकिन फिर भी वे सब के दिल को भाते।

कहाँ हैं वो, कहाँ है वो मस्ती
मैं ढूँढ रहा उन्हें,
बीतीं कितनी
भावभरी बरसातें।

पैसा बनाम मानसिक शांति

डॉ. संदीप कुमार बाजपेई,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मानसिक शांति मनुष्य के सम्यक जीवनयापन और प्रसन्न रहने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। मनुष्य अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक दायित्वों को ठीक से तभी पूरा कर सकता है जब उसका मन शांत हो। आज लोगों के पास धन की कमी नहीं पर मानसिक शांति की कमी अक्सर देखी जाती है। क्या धन या पैसा मानसिक शांति दे सकता है?, सामान्य उत्तर है, नहीं। मानसिक शांति ऐसी वस्तु नहीं जो पैसे से खरीदी जाती हो, पर पैसा जीवन की कई चिंताओं और समस्याओं को कम अवश्य कर सकता है, और हमें मानसिक शांति पाने और खुश रहने में मदद कर सकता है।

जीवन में पैसे के महत्व से हम भली-भांति परिचित हैं। अपनी रोज़मर्रा की ज़रूरतों के अलावा भी सभी की बहुत सारी ज़िम्मेदारियाँ ऐसी होती हैं जिन्हें ठीक से निभाने के लिए आवश्यक मात्रा में पैसा होना ज़रूरी है। न चाहते हुए भी जीवन में कई बार ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं, जिनमें पैसे का नुकसान या खर्च होता है। अक्सर हम निम्नलिखित दो प्रकार की परिस्थितियों का सामना करते हैं:

पहली परिस्थिति –जब हमें धन का सीधे-सीधे नुकसान हो जाता है।

जीवन में धन की हानि हो जाने पर उसे आसानी से सह पाना अपने आप में एक कला है। पैसा हाथ का मैल है, पैसे का बहुत महत्व नहीं है, इस तरह की बहुत सारी कहावतें हम सुनते रहते हैं, पर नुकसान सह पाना किसी के लिए भी आसान नहीं। एक बार किसी तरह किसी अपरिहार्य नुकसान को सहजता से सह सकें तो मानसिक शांति बनाए रखना बहुत आसान हो जाता है।

घर में कोई क्रीमती समान किसी तरह से टूट गया, कितना भी चिल्ला लें, गुस्सा कर लें, दुःखी हो लें, वह वापस नहीं आ सकता। जितनी जल्दी हम इस हानि को स्वीकार कर के आगे बढ़ जाएं, उतनी जल्दी मन शांत हो जाएगा।

पैसों का नुकसान उठाना आसान काम नहीं, पैसे कमाने में और बचाने में बहुत मेहनत लगती है। पर यदि नुकसान अवश्यंभावी हो जाए तो ठंडे दिलो-दिमाग से हमें उस परिस्थिति को स्वीकार कर लेने में ही भलाई है। इस तरह ज्यादातर मौकों पर नुकसान तो तय ही है, चाहे कितनी ही कोशिश कर लें।

जैसे किसी व्यापार में जब पैसे की कोई हानि हो जाए या दिया हुआ कोई कर्ज़ वापस न आ रहा हो तो उसे बट्टा खाता में डाल दिया जाता है, राइट ऑफ़ कर दिया जाता है, उसी प्रकार कभी-कभी व्यक्तिगत स्तर पर पैसों का नुकसान हो जाने पर पैसों को राइट ऑफ़ करना जीवन को आसान बना देता है।

दूसरी परिस्थिति—जब किसी समस्या के हमें दो समाधान दिखते हैं, पहला जिसमें हम अपना समय, मानसिक शांति और ऊर्जा खर्च करें और उस समस्या का हल खोजें, और दूसरा जिसमें हम कुछ पैसों का नुकसान उठाएँ और समस्या को समाप्त करें।

व्यक्तिगत स्तर पर अपनी छोटी-छोटी परेशानियों से निपटने के लिए, अपनी मानसिक शांति, ऊर्जा और समय को सुरक्षित रखने के लिए कई बार हमें ऐसे निर्णय करने पड़ते हैं जिनमें अधिक पैसे खर्च होते हैं। मेरे विचार में यदि हमें अपनी सीमाओं में रहकर कुछ पैसे खर्च करके छोटी-मोटी समस्याओं से मुक्ति मिलती है, जीवन सुगम होता है, तो ऐसा कर लेना चाहिए। हमें किन परिस्थितियों में किस परेशानी से निपटने के लिए कितने पैसे खर्च करने हैं, या नहीं करने हैं, इसका निर्णय समय, परिस्थितियों और अपनी प्राथमिकताओं के आधार पर हमें करना होता है।

वैसे तो समय, ऊर्जा और मानसिक शांति की धन से तुलना करना संभव नहीं, ये अनमोल हैं, परंतु फिर भी, कई बार ऐसा करना उचित होता है। उदाहरण के लिए कोई ऐसी परिस्थिति हो सकती है जिसमें दो घंटे खर्च करके किसी के पाँच रुपये बच रहे हैं, या पाँच सौ या पाँच हज़ार, इस से निर्णय पर फ़र्क पड़ता है। साथ ही इस बात से भी फ़र्क पड़ता है कि किसी व्यक्ति के पास कितना समय और क्षमता है।

अपनी रचना 'द यूथिडेमस' में प्लेटो कहते हैं, 'एक बुद्धिमान व्यक्ति पैसे का उपयोग सही तरीके से अपने जीवन को बेहतर बनाने में करता है'। मानसिक शांति

और जीवन को कुछ सहज बनाने के लिए कई बार कुछ पैसों का नुकसान उठाना या अपनी क्षमता के अनुसार जैसे खर्च कर पाना संभव हो सके तो बहुत सी छोटी-छोटी परेशानियों से बच जा सकता है।

यूनाइटेड किंगडम में एक श्री फ्रेडी बेकिट दूसरों के लिए लाइनों में खड़े होते हैं और प्रतिदिन लगभग 160 पाउन्ड (लगभग रुपये) कमाते हैं। वे प्रति घंटे 20 पाउंड की दर से जैसे लेते हैं। जो लोग इन से काम लेते हैं, शायद उन का समय इस से कहीं अधिक मूल्यवान होता होगा। नवंबर 2016 के एक समाचार के अनुसार भारत में भी नोटबंदी के समय 'बुक माइ छोट्टू' नाम के एक स्टार्ट-अप ने 90 रुपये प्रति घंटे की दर से लोगों को एटीएम की लाइनों में खड़े होने के लिए सेवाएं उपलब्ध करवाईं। इन दृष्टान्तों का उद्देश्य मात्र यह रेखांकित करना है कि लोग किस प्रकार अपना जीवन अपनी क्षमता के अनुसार जैसे खर्च कर के आसान बनाने की चेष्टा करते हैं।

वैसे तो किन्हीं दो लोगों के लिए एक परिस्थिति में दो अलग-अलग हल हो सकते हैं, पर वस्तुतः जीवन की बहुत सी समस्याओं का हल अंततः इस बिन्दु पर आ कर रुकता है कि हमें और अधिक तनाव लेना है, अपनी क्षमता से अधिक प्रयास करने हैं, अत्यधिक भागदौड़ करनी है, या कुछ अधिक जैसे खर्च करने हैं ताकि जीवन की छोटी-मोटी परेशानियाँ कम हो सकें।

जीवन के विभिन्न चरणों में हमारी प्रथमिकताएं अलग-अलग होती हैं। जैसे छात्र जीवन में जब हम आर्थिक रूप से माता-पिता पर निर्भर होते हैं, उस समय न्यूनतम संसाधनों का उपयोग तथा अधिक मेहनत हमारी प्राथमिकता होती है। किसी नौकरी या व्यवसाय में आने के बाद धीरे-धीरे हम स्थायित्व की ओर बढ़ते हैं, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर तथा सुदृढ़ हो जाते हैं। जीवन के इस पड़ाव पर जीवन में छोटी-छोटी सुविधाओं के लिए कुछ शुल्क चुका कर हम अपने लिए कुछ सहूलियतें हासिल कर के जीवन को आसान बना सकते हैं।

जैसे किसी व्यापार में किसी विशेष प्रकार के खर्च का प्रावधान (provision) किया जाता है, वैसे ही व्यक्तिगत स्तर पर हमें कुछ पैसों का प्रावधान समय पड़ने पर समस्याओं के हल और जीवन को आसान बनाने के लिए करना चाहिए।

कहने का अर्थ यह नहीं है कि अपने मेहनत के पैसे को छोटी-छोटी बातों पर, अनावश्यक रूप से बर्बाद करें, फ़िज़ूल में खर्च करें, पर बहुत ज़रूरी है कि थोड़े बहुत पैसे खर्च करके या कुछ पैसों का नुकसान करके मिलने वाली मानसिक शांति और बचने वाले समय और ऊर्जा का एक विश्लेषण करें और सही फ़ैसला लें।



हिन्दी पखवाड़ा -2022 के समापन के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रख्यात हिन्दी साहित्यकार सुश्री अंजना संधीर द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

लड़का बनने की ज़रूरत नहीं

सुभाष बंसीवाल,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

लड़का बनने की ज़रूरत नहीं, लड़की हूँ लड़ सकती हूँ।
हाँ, लड़की हूँ लड़ सकती हूँ ॥

लड़के हैं खानदान का भविष्य, लड़कियों को 18 तक सहना है।
लड़की हूँ, शिक्षा का मौका तो दो, खानदान का सुनहरा भविष्य मैं भी बन सकती हूँ।

लड़का है बुढ़ापे का सहारा, लड़की है धन पराया।
हाँ लड़की हूँ, पर सोच तो बदलो, बुढ़ापे का सहारा,
मैं भी बन सकती हूँ।

लड़का है जीवन भर की पूंजी, लड़की है किसी और घर की कुंजी।
हाँ लड़की हूँ; पर सोच तो बदलो जीवन भर,
मैं भी कमा कर दे सकती हूँ।

लड़की हूँ, चूल्हा-चौका करती हूँ, पर वहीं सीमित
नहीं रहना मुझे।
चाहूँ करना मैं हर चीज़ में तरक्की, हक से कहना है मुझे।

लड़की हूँ, बोझ समझती है दुनिया, बोझ नहीं सहारा हूँ मैं,
ये सच करके दिखलाऊंगी।
तुम तोड़ो तो जंजीर, मैं जग में नाम कमाऊंगी।

राहों की मुश्किलें पार कर आगे मैं बढ़ सकती हूँ,
लड़का बनने की ज़रूरत नहीं, लड़की हूँ लड़ सकती हूँ।
हाँ लड़की हूँ, लड़ सकती हूँ ॥

समय चक्र

हर्षद आर. परमार,
लेखापरीक्षक

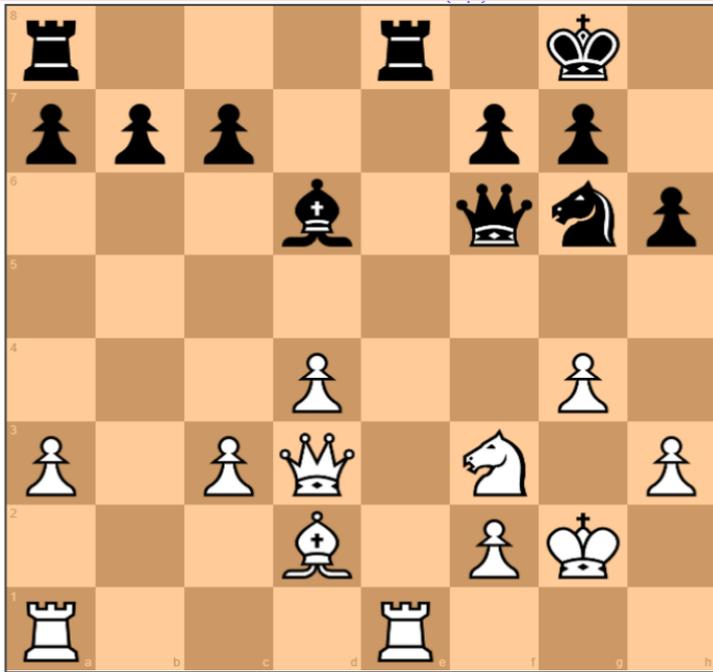
समयचक्र चलता हर क्षण,
कभी सुख के पल, कभी कष्ट अटल।
कभी ठहरे वक्रत , कभी दिन बीते जैसे एक क्षण।
कभी तपती धरती बिन नीर, कभी जलप्लावन से विह्वल।
कभी पतझड़ से नीरस वन, कभी चहुँओर खिले बसंत।
कभी हर्षित हों स्वजनों के संग, कभी सब होते अलग-थलग।
कभी आह्लादित हों सुन बोल, कभी स्वर लगते जैसे शर ।
कभी महलों में भी उद्विग्न, कभी फुटपाथों पर मदमस्त।
कभी लहरों सा हो उत्साह, कभी हों अवसादों से ग्रस्त।
सब दुःख का आखिर क्या कारण?
परिवर्तन के पथ पर सवार है, समय चक्र सबका उत्तर।
सुख करना है दुःख का कारण, दुःख सहना है सुख का साधन।

आनंद का रैज़िग्रेशन

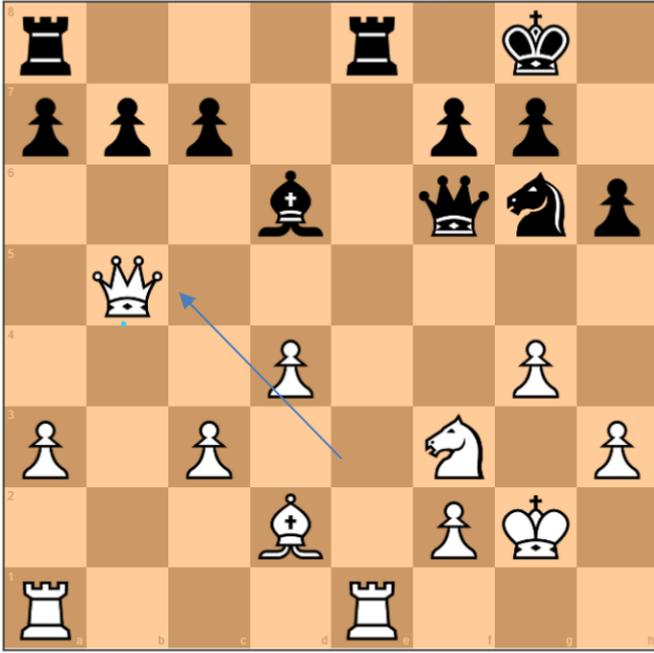
हर्षित पांडे,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आनंद का रैज़िग्रेशन

31 मई 2022 से 11 जून 2022 के दौरान आयोजित दसवें अल्टीबॉक्स नॉर्वे चेस क्लासिकल टूर्नामेंट के आठवें राउन्ड में भारतीय ग्रैंडमास्टर विश्वनाथन आनंद का मुकाबला अज़रबैजानी ग्रैंडमास्टर शकरयार ममेद्रायोव से था जिसमें आनंद सफेद मुहरों से खेल रहे थे। इस खेल में 21 मूव होने तक बोर्ड की स्थिति निम्नानुसार थी:



इसके बाद आनंद ने 22वां मूव Qb5 चला:



यह चाल चलने के संभवतः एक सेकंड बाद ही आनंद को समझ आ गया कि उनसे बहुत बड़ी गलती हो गई है और उन्होंने गेम से रिज़ाइन कर दिया। उनके प्रतिद्वंदी शकरयार उस समय अपनी सीट पर मौजूद नहीं थे। कुछ मिनट बाद वे जैसे ही वापस आए आनंद ने अपना रैज़िगेशन उन्हें सूचित करते हुए उनसे हाथ मिलाया। बाद में हुई प्रेस कॉन्फ्रेंस में शकरयार तथा कुछ अन्य खिलाड़ियों ने बताया कि उन्हें पहली बार में समझ ही नहीं आया कि आनंद ने रिज़ाइन क्यों किया ।

मैं चाहता हूँ कि इस लेख के शतरंजप्रेमी पाठक स्वयं अंदाज़ा लगाएँ कि आनंद ने उपर्युक्त दर्शित पोज़ीशन में Qb5 चलने के पश्चात रिज़ाइन क्यों किया।

जो पाठक उक्त पोज़ीशन में आनंद के रेसिगेशन का कारण समझने में सफल रहे हैं वे बधाई के पात्र हैं क्योंकि वे बिलकुल एक ग्रेडमास्टर की तरह सोचते हैं। अन्य सभी पाठकों के लिए रेसिगेशन का कारण निम्नानुसार है (कृपया नीचे बताएँ मूव्स के अनुसार बोर्ड पर मुहरों की स्थिति को देखने हेतु अपनी कल्पनाशक्ति का प्रयोग करें):

1. वाइट के Qb5 मूव के पश्चात ब्लैक का स्वाभाविक मूव होगा - $Q \times f3$ । यदि इस क्वीन सैक्रिफाइस को स्वीकार करते हुए वाइट चले - $K \times f3$ तो ब्लैक का अगला मूव होगा $Nh4$ जो वाइट की चेकमेट होगी ।
2. यदि वाइट उक्त क्वीन सैक्रिफाइस को स्वीकार न करे तो उसे $Kf1$ अथवा $Kf2$ का मूव ही चलाना पड़ेगा जिसका अर्थ होगा $f3$ स्क्वायर पर कैप्चर हुए अपने नाइट को मुफ्त में गंवाना जिसके पश्चात वाइट के g तथा h पौन भी शीघ्र ही कैप्चर कर लिए जाएंगे, वाइट किंग लगभग ओपन पोज़ीशन में होगा तथा एक ग्रैंडमास्टर के सामने वाइट के लिए गेम में चेकमेट से बचाना असंभव होगा।



हिन्दी पखवाड़ा 2022 के अंतर्गत चित्र देखो कहानी लिखो प्रतियोगिता

स्कूल के ज़माने में एक कहानी हम सब ने सुनी है, खरगोश और कछुए की दौड़ की कहानी। ऐसी ही एक दौड़ मेरे दिल में भी अविरत चलती रहती है, मेरी वज़न घटाने की इच्छा और मेरी वज़न बढ़ाने की प्रकृति के बीच में। वज़न उतारने के प्रयत्न कछुए की तरह धीरे धीरे आगे बढ़ते हैं और वज़न खरगोश की चाल से बढ़ रहा है। दिल में एक उम्मीद है कि कभी तो खरगोश अपने बढ़े हुए वज़न के अभिमान में सो जाएगा और कछुआ अपनी मंथर गति से आगे निकल जाएगा।

अनुभव ने मुझे ये समझाया है कि बच्चों की कहानियों में खाया, पिया, राज किया, जैसा सुखांत होता है, वैसा वास्तविक जीवन में कभी होता नहीं। हकीकत में हल्का-फुल्का खरगोश ज़्यादा खाकर अपना वज़न बढ़ा लेता है और भारी-भरकम कछुआ कभी हल्का नहीं होता। भोलापन, कौतूहल, सरलता, कितनी सारी बातें जब हमने पाठशाला की चौखट छोड़ी तो वहीं पर छोड़ कर आगे निकल गए।

फिर भी मेरे मन में अब भी यह ख्याल रहता है कि कुछ मेहनत करूँगा, थोड़ी-बहुत वर्ज़िश, थोड़ी सी साइकलिंग, और मेरा वज़न ज़रूर कम होगा।

कुछ सालों से वज़न घटाने के लिए मैं बहुत प्रयत्न कर रहा हूँ। जयपुर और मस्कत में मैं जिम जाता रहा हूँ। शाम का खाना कम किया है। सप्ताह में एक बार शाम को खाना नहीं खाता, तली हुई चीज़ें, घी, बहुत सी मिठाइयाँ, सब कुछ त्याग करके देखा है और इन सबसे थोड़ा बहुत अच्छा लगता है, लेकिन शरीर पहले जैसा इकहरा नहीं होता। कहते हैं कि इस धरती पर सबसे पहले बोला गया वाक्य है “ये दुनिया पहले जैसी नहीं रही”।

कुछ समय पहले एक दिन कमर में झटका लगा। गाँधीनगर से अहमदाबाद जाने के रास्ते पर हर एक गड्ढा अपनी हाज़िरी देने लगा। गुजरात के रास्ते बहुत अच्छे हैं, ऐसा एक भ्रम था जो टूट गया। ये सच है कि रास्ते तो हैं लेकिन क्वालिटी ऑफ़ राइड्स का भी कोई मापदेड होना चाहिए। रोज़-रोज़ की इस मुसाफ़िरी से परेशान हो कर शरीर बोला कि वज़न बढ़ गया है और पीठ में दर्द हो रहा है।

ओह! मिज़ोरम के मुश्किल पहाड़ी सफ़र में भी ख़राब रास्तों पर और कभी-कभी तो जहाँ रास्ता नहीं है ऐसी जगह पर भी, मुसाफ़िरी में कभी इतनी परेशानियाँ नहीं हुई थीं।

सच में मेरा वज़न कम हुआ था कि मेरी अच्छे रास्ते की अपेक्षा?

मस्कत में मुझे खुद काम करने का मौका मिला जो कि मिज़ोरम में और बढ़ गया। अरब और मिज़ो, दोनों समुदायों में ऊंच-नीच के भेदभाव नहीं हैं। हर जगह हर किसी का एक समान वज़न होता है, शरीर पर और समाज में भी। सारे लोग सब काम करते हैं। शाकाहारी होने की वजह से मेरे भोजन की सीमाएँ थीं। शुद्ध सामिष प्रदेश में मेरी हालत ख़राब हो गई। बाहर का कुछ खाना खा नहीं सकते इस लिये घर पर खाना बनाना ही एक मात्र विकल्प।

उत्तर-पूर्व में सुबह बहुत जल्दी हो जाती है और मेरी जैविक घड़ी मुझे रोज़ जल्दी उठा देती है, कुछ इसलिए और कुछ तो मुझे पहाड़ों में चलना अच्छा लगता है इसलिए, मैंने रोज़ सुबह चलना शुरू किया। आइज़ोल की ऊंची-नीची सड़कों पर चलने का एक अलग ही मज़ा है। पहाड़ी हवा फेफड़ों को शुद्ध प्राणवायु से भर देती। रोज़-रोज़ चलने से, घर का काम खुद करने से और ज़्यादातर सिर्फ़ घर का खाना खाने से मेरा वज़न काफ़ी काबू में रहा।

इस तरफ़ गुजरात तो खाने पीने के शौकीन स्वाद प्रेमी लोगों के लिए स्वर्ग है। यहाँ पे वज़न कम करना किसी राजसूय यज्ञ से कम नहीं है।

दिल्ली में बहुत साल पहले एक बार सुनिल विदेश से मिलने के लिये आया था और बीरेन देश से ही। हम तीन दोस्त बहुत समय बाद मिले। एक दिन शाम को कहीं बाहर से वापस आ रहे थे तब किसी एस्टेट के छोटे रास्ते से जाने के लिए चौकीदार के साथ बात करनी पड़ी। बहुत साल बाहर रहने के बाद सुनिल ये सोच रहा था कि ऐसे क्यों कोई अपना रास्ता इस्तेमाल करने की इजाज़त देगा, लेकिन चौकीदार ने दरवाज़ा खोल के हमको उस रास्ते से जाने दिया।

मैंने तुरंत कहा, 'देखा अगर आप ठीक से बात करो तो वो आपको जाने देगा'।

बीरेन बोला कि जब तुमने कहा तो तुम्हारी आवाज़ से उसको पता चल गया कि ये कोई अफ़सर होगा इसलिए उसने हमें जाने दिया।

मैं नहीं माना लेकिन वो अपनी बात पे उटा रहा।

यकायक मुझे ये अहसास हुआ कि अरे! क्या मेरी आवाज में भी सरकारी वज़न आ गया? और मैं अब तक इसी भ्रम में जी रहा हूँ कि मैं बहुत ही डाउन-टु-अर्थ हूँ। कौन जाने कब ये साहबगिरी पिछले दरवाज़े से घुस गई? और हम बात कर रहे थे वज़न घटाने की। जो सुना वो मुझे ज़्यादा पसंद नहीं आया। और मैंने ये निश्चित किया कि किसी तरह ये सरकारी वज़न तो मुझे कम करना ही है।

कुछ लोगों के व्यक्तित्व ही वज़नदार होते हैं और ये भी सच है कि उनकी हर बात में वज़न होता है। उनके मौन में भी वज़न होता है। कुछ लोगों की सारी ज़िंदगी इसी बात में निकल जाती है कि कहीं तो उनका वज़न हो! इस बात के लिए वे ढेर सारी मेहनत करते हैं।

कभी कोई वज़न उठाने की बात आती है तो कुछ लोग कहते हैं, 'मैं ज़्यादा वज़न नहीं उठा पाऊँगा', 'मेरी रीढ़ की हड्डी की गद्दी (डिस्क) खिसक गई है या फिर घिस गई है', या फिर 'मुझे कशेरुका की कठिनाई है'। यही लोग सारी ज़िन्दगी कितना सारा बोझ सर पर उठाकर घूमते हैं। इन लोगों को इसका वज़न क्यों नहीं लगता?

कुछ लोग तो ऐसे होते हैं जैसे कि विधाता से लिखवा के लिए हों कि मैं सब कुछ अपने सर पे उठाऊँगा। वज़न उठाकर चलने के ये लोग शौकीन होते हैं। अगला कुछ भी कहे, उसकी वाणी, व्यवहार या लेखन का, उनका मन अंदर से अन्वेषण करके उसके निष्कर्षों का बोझ अपने दिल पर डाल देता है।

कोई बोला या नहीं बोला?
अगर बोला तो क्या बोला?
कैसे बोला?

इसका ऊपर से और अंदर से क्या मतलब था?
वह सकारात्मक था कि नकारात्मक?

ये ही क्यों कहा?
और ये क्यों नहीं कहा!

किसी ने उनकी तरफ़ देखा कि नहीं देखा?
देखा तो कैसे देखा?
सन्द्राव से दुर्भाव से या बिना किसी भाव से?

कोई मुस्कराया कि नहीं मुस्कराया?
मुस्कराया तो कैसे?
दिल से कि मज़ाक में या सिर्फ़ दिखाने के लिए?

बोझ ढो-ढो कर कैसे दुःखी होना है ये तो कोई इन्हीं लोगों से सीखे!

एक बार एक दोस्त ऐसे ही किसी वज़नदार कारण से रूठ गया। किसी सामाजिक आयोजन में अनजाने में उसके साथ एक मज़ाक कर दिया। फिर उसको मनाने के भरसक प्रयास किए, कितने ही दिनों तक किए। ऐसे ही एक प्रयास में सुनने को मिला कि समाज में मेरा एक नाम है, मेरी एक इज़्ज़त है और आपने सबके बीच मेरे साथ मज़ाक उड़ाया।

मैं मन ही मन सोचता हूँ ओह!, मान-सम्मान, समाज में इज़्ज़त का भी कितना भारी वज़न! हे भगवान, कब इनको समझ आएगी कि कितनी बेबुनियाद बातों को महत्त्व दिया और वो भी कितना निरर्थक। और यह बोझ भी सारी ज़िंदगी ढोते रहना है?

मुझे ऐसा भी लगता है कि जिस समाज या जिन लोगों के नाम पर हम ज़िंदगी भर बोझ उठा के चलते हैं, उनके दिल में तो हमारा कोई वज़न ही नहीं। उस बोझ को उठा के चलने से क्या फ़ायदा होगा। सारी ज़िन्दगी उस बेकार बोझ के कारण कितनी परेशानियाँ झेलीं और आखिर में क्या मिला? जले हुए स्वप्न की राख...

और रोज़ रोज़ जो दिल पर इकट्ठा करते हैं, उस बोझ का क्या?

अधूरी इच्छाओं का वज़न,
बीती हुई दुःखद घटनाओं का वज़न,
प्रियजनों की दुःखद विदाई का वज़न,
अपने सिद्धांतों पर चल कर काम करते-करते मिली निराशा का वज़न,
किसी रिश्ते को निभाते-निभाते अपने आप को नहीं संभाल पाने का वज़न,
समय-समय पर दिल को मारकर बुद्धि से लिए हुए निर्णयों का वज़न,
भीष्म की तरह सच्चाई जानने के बावजूद कुछ भी न कर सकने का वज़न।

कितनी भारी हो गयी ज़िंदगी, कभी-कभी तो ऐसा लगता है जैसे कि अब एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकते। जो वज़न मुझे अपने से ही दूर ले जाए उस को कम करना ही अक्लमंदी का काम है। सच तो यह है कि लोगों को मेरे साथ हल्कापन महसूस होना चाहिए न कि मेरे वज़न का बोझ।

बहुत कम लोग अपना सारा वज़न उतारकर जीते हैं। मुझे ऐसे हल्के-फुल्के लोग बहुत पसंद हैं और इनसे जलन भी होती है। कितनी मज़े की ज़िंदगी!

सुख का मापदंड ये नहीं है कि मुझसे अपना भौतिक और मानसिक वज़न आसानी से उठ सकता है।

मापदंड ये है कि इन दोनों में धीरे धीरे ही सही, कमी हो रही है कि नहीं....



नराकास के तत्वाधान में पदयात्रा के सफल आयोजन हेतु प्रधान महालेखाकार महोदय को नराकास अध्यक्ष द्वारा सम्मानित किया गया।



सूफ़ हस्तशिल्प

सूफ़ कढ़ाई धागों को गिन कर की जाने वाली एक कढ़ाई की हस्तकला है। इस कला की विशेषता इसमें प्रयोग की जाने वाली ज्यामितीय आकृतियाँ हैं जिनमें त्रिकोणाकार तथा वी आकार के डिज़ाइन जिन्हें लहर कहा जाता है, का प्रयोग किया जाता है।

कपड़े पर कढ़ाई शुरू करने से पहले कलाकार कोई भी डिज़ाइन कपड़े पर अंकित नहीं करते बल्कि अपनी कल्पनाशक्ति, प्रतिभा और अनुभव के आधार पर धागों से कपड़े पर उल्टी तरफ़ से उत्कृष्ट कढ़ाई करते हैं।

सूफ़ का शाब्दिक अर्थ है, साफ़-सुथरा। नाम के ही अनुरूप इस कला में कलाकार इतनी सफ़ाई से कढ़ाई करते हैं कि ये मशीन से की गई प्रतीत होती है।

कभी कभी डिज़ाइन के साथ शीशे का भी काम किया जाता है जिससे कपड़े और भी आकर्षक बन जाते हैं।



चित्र विचित्र मेला

मार्च के महीने में आयोजित, चित्र-विचित्र मेले का नाम राजा शांतनु के पुत्रों, चित्रवीर्य और विचित्रवीर्य के नाम पर रखा गया है। यह गुजरात का एक महत्वपूर्ण मेला है। होली के त्यौहार के बाद मनाए जाने वाले इस मेले में देश भर से बड़ी संख्या में स्थानीय लोग और पर्यटक शामिल होते हैं।

यह आदिवासी मेला गुजरात के साबरकांठा ज़िले के गुनभाखरी गाँव में लगता है जिसमें बड़ी संख्या में भील और गरासिया जनजातियाँ भाग लेती हैं। मेले का मुख्य आकर्षण साबरमती, आकुल और व्याकुल नदियों के संगम पर स्थित भव्य मंदिर है।

पारंपरिक पोशाक पहने लोगों और पारंपरिक रीति-रिवाज़ों के प्रदर्शन के साथ यह मेला आदिवासी लोगों के जीवन की एक सुंदर झलक देता है।